बालसखापुस्तकमाला सं० १७

वालनिवन्धमाला

गंगाप्रसाद बी० ए०, एस० सी०

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, प्रयाग

विक्रमी

के लिए हाथों में कड़े, कानों में बाले और गले में कण्ठा आदि पहना देते हैं। इससे उनका यह भी आशय होता है कि जो कोई देखे वह यह जान ले कि हम बड़े अमीर हैं। जब कोई विवाह आदि होता है तब बहुत से ग़रीब लोग पड़ोसियों का गहना माँग कर अपने बच्चों को पहना देते हैं। और जिस पर कम गहना होता है उसी की कम इज़्ज़त होती है।

वास्तव में गहना पहनाना माता-पिता की बड़ी भूल है। पहले तो गहना पहनने वाले बच्चे को अभिमान हो जाता है। वे अपने आपको दूसरों से बड़ा समझते और अकड़ कर चलते हैं। इसलिए उनमें वह नम्रता नहीं रहती जो बच्चों का स्वभाव होना चाहिए। जब शुरू से ही बच्चों की शेख़ी करने की आदत हो जाती है तब वे यथोचित विद्या नहीं पढ़ सकते।

बहुत भारी गहना पहनने से बच्चों के शरीर की बढ़ोतरी मारी जाती है। बचपन में बच्चा दिन दूना रात चौगुना बढ़ता है। जितनी बढ़ोतरी बचपन में होती है उतनी फिर

निवेदन

बालनिबन्धमाला छ. . . ।पार हो गई। इसमें बाल-
पयोगी भिन्न भिन्न ३५ विषयों पर छोटे छोटे निबन्ध
ये गये हैं। आशा है, इस उपदेशप्रद पुस्तक से बालकों
अनेक प्रकार की शिक्षायें मिलेंगी। यदि इस पुस्तक से
लकों को कुछ भी लाभ हुआ तो मैं अपना श्रम सफल
मझूँगा।

लेखक

विषय-सूची

—:०:—

...षय			पृष्ठ
? निबन्ध लिखने की रीति	...	...	१
२ सचाई	...	..	४
३ विद्या	...	...	८
४ ईश्वर	...	...	११
५ पवित्रता	...	...	१५
६ आशा	...	. .	१७
७ सत्सङ्ग	...	. .	२०
८ प्रेम	...	...	२५
९ उद्यम	...	...	२८
... माता-पिता की सेवा	...	...	३२
... स्वास्थ्य	...	. .	३८
... व्यायाम	...	...	४२
...	...	...	४५
...ज्ञान	...	...	४८
...य अर्थात् किफ़ायत	...	...	५१
	...	...	५६
	...		६...

विषय
१९ स्त्री जाति का पढ़ाना ... ...
२० देशाटन ... ...
२१ मेले ... ...
२२ डाक ... ...
२३ खेती ... ...
२४ तिजारत या व्यापार ... ...
२५ पुस्तकें ... ...
२६ अख़बार ... ...
२७ शराब ... ...
२८ तमाकू ... ...
२९ प्रतिज्ञा-पालन ... ...
३० देशभक्ति ... ...
३१ राजभक्ति ... ...
३२ कला-कौशल ... ...
३३ परोपकार १
३४ बड़ों का सत्कार १
३५ धर्म-रक्षा १

बालनिबन्धमाला

१—निबन्ध लिखने की रीति

किसी विषय का पूरी तरह से बयान करना निबन्ध
कहलाता है। अच्छा निबन्ध लिखने के लिए सबसे ज़रूरी
ह है कि हमको उस विषय का पूरा पूरा ज्ञान हो।
दाहरण के लिए रेल को ले लो। जो मनुष्य यह नहीं
नता कि रेल गाड़ी क्या चीज़ है, उसके बनाने की क्या
रकीब है, उससे क्या क्या फ़ायदे हैं, वह मनुष्य रेलगाड़ी
र निबन्ध नहीं लिख सकता। परन्तु भिन्न भिन्न चीज़ों
ा ज्ञान प्राप्त करने के लिए ज़रूरी है कि हम अनेक
स्तकों को पढ़ें और दुनिया की चीज़ों का भले प्रकार
वलोकन करें। इसलिए सबसे अच्छा लेख वही लिख
सकता है जो बहुत सी किताबों को नित्य पढ़ता, उन पर
विचार करता तथा अनेक चीज़ों को ध्यानपूर्वक देखता
है। जब तक तुम पढ़ो नहीं तुम विचार किस पर करोगे
और जब तुम विचार नहीं कर सकते तो लिखोगे क्या?
एक दिन के पढ़ने से ही अच्छे लेखक नहीं बन सकते।
स के लिए नित्य पढ़ना आवश्यक है।

जब तुम कोई लेख लिखने बैठो तो पहले
कि तुमने उसकी बाबत क्या क्या पढ़ा है तथा
विषय में क्या क्या जानते हो। सम्भव है कि
पर तुमको आज लेख लिखना है उसकी बा
पहले कभी कुछ नहीं पढ़ा। ऐसी हालत में भी
और किताबें पढ़ते रहे हो तो इस नये विष
विचारने में आसानी होगी। पहले तो तुम इस
विषय समझ कर घबरा जाओगे। परन्तु, यदि,
तक विचार करोगे तो बहुत से ख़यालात स्वयं
मन में आने लगेंगे। जब कुछ ख़यालात मन में
तब उन सबके कई भाग कर लो जिससे कहीं
कहीं न लिखी जाय। जो लोग ऐसा नहीं करते
सोचे समझे ऊटपटाँग लिख मारते हैं और बहुत
कर भी फ़ेल हो जाते हैं। जब तुम अपने मज़मून
भाग कर लोगे तो थोड़ा थोड़ा हर एक भाग की
लिखने से बहुत हो जायगा। साधारण दशा
मज़मून के इतने भाग हो सकते हैं:—उदाहरण के
रेलगाड़ी को लो।

उनका ढंग बिगड़ जाता है। जिस तरह अगर ... सिर हाथ भर लम्बा हो और पैर एक बालिश्त हो ... मनुष्य बहुत बुरा लगेगा। इसी तरह अगर तुम्हारे लेख ... एक भाग दूसरे से अधिक बढ़ जायगा तो शोभा न ... इसलिए विषय-विभाग के लिए समय-विभाग ... ज़रूरी है।

लेख लिखते हुए इस बात का भी ध्यान ... तुम्हारे शब्द रोचक और सरल हों। बड़े बड़े और ... शब्द डाल देने से भाषा की शोभा जाती रहती है ... अशुद्धियाँ भी बहुत सी हो जाती हैं। अगर ... दोहा या चौपाई याद हो तो उसको भी लिख दो; ... बहुत से पद्य लिखना ठीक नहीं है। किसी विद्वान ... कथन भी कहीं कहीं लिख देना अच्छा होगा। परन्तु ... कथनों को उचित स्थान पर लिखना चाहिए। जब ... लेख लिख चुको तो दस मिनट में उसको फिर ... जाओ और जो कोई अशुद्धि दीख पड़े उसे ठीक ... दो। अगर इन सब बातों का ख़याल रक्खोगे ... तुम्हारा लेख अवश्य अच्छा होगा।

२–सचाई

जिस वस्तु का जैसा ज्ञान हमारे मन में हो उसको वैसा ही कहना सत्य या सचाई है। अगर हम जानते हैं कि रामचन्द्र आज कल कलकत्ते में हैं, चाहे वह वहाँ न भी हों और हम यह कहें कि रामचन्द्र आज कलकत्ते में ...

ा हम सच कह रहे हैं। परन्तु यदि हमको मालूम
त यह मधुरा में है और हम कहते हैं कि वह कलकत्ते
तो यह हमारा झूठ है। इससे मालूम हो गया कि
ने ज्ञान के अनुकूल कहना ही सच और उसके विरुद्ध
ना झूठ कहाता है।

सचाई मनुष्य में सबसे बड़ा गुण है। जो सच्चा नहीं
पशु से भी नीच है । क्योंकि झूठ पशु भी नहीं
लते। विद्वानों ने सच को ही सबसे बड़ा तप माना
तुलसीदास जी कहते हैं कि—

"सांच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप।
जाके हृदय सांच है, ताके हृदय आप॥"

दुनिया के सब काम सच ही से चलते हैं। जो मनु
च बोलता है उसका सब मान करते हैं, उसी
विश्वास होता है । परन्तु जो मनुष्य झूठ बोलता
उसका कोई विश्वास नहीं करता। अगर सब लोग झू
बोलने लगें तो कोई किसी का विश्वास न करे
दुनिया के सब काम बंद हो जायँ। जब तुम बाजार
तरकारी लेने जाते हो तो केवल विश्वास पर ही कुँज
तुमको तरकारी तौल देती है। यदि उसे यह डर हो
तुम झूठ बोलते हो तो वह पहले पैसा लिये बिना तरका
न दे और तुम बिना तरकारी लिये पैसा न दो इस त
कभी काम न चले। जब एक बार मनुष्य झूठ बोलता
तब उसकी कोई प्रतीति नहीं करता और यदि वह सच
कहता हो तो भी झूठ समझते हैं। एक कवि कहता है

"आँइ पुकारे पीग्यदा, फिर मानहि सब कोय।"

तुम सबने एक गड़रिये के लड़के का किस्सा सुना होगा, जो झूठ मूठ चिल्ला उठा था कि भेड़िया आया भेड़िया आया। एक दिन भेड़िया सच मुच आ गया परन्तु किसी ने उसका विश्वास न किया और भेड़ों को भेड़िया ले गया। अगर वह झूठ न बोलता उसकी यह दशा न होती। इसी तरह जो लड़के झूठ बोलते हैं उनका मास्टर साहिब विश्वास नहीं और चाहे वे सच मुच ही बीमार क्यों न हों उनको झूठ समझ कर उनको सज़ा दी जाती है। इसलिए विश्वास की जड़ है। परमात्मा ने मनुष्य को ज़बान बहुमूल्य रत्न दिया है। इसलिए चाहिए कि झूठ बोल हम ज़बान को अपवित्र न करें। मनुजी महाराज हैं कि ज़बान को सत्य से पवित्र करना चाहिए। मनुष्य पान से मुँह को सुशोभित करते हैं वे भूलते हैं मुख का भूषण तो सत्य ही है। जो विद्वान हैं वे केवल इसी भूषण को धारण करते हैं। देखो श्रीमहाराज हरिश्चन्द्रजी ने अनेक कष्ट सहे परन्तु सत्य से न डिगे। इसीलिए आज तक उनका नाम चला आता है। जो मनुष्य सत्यवादी है उसका आत्मा पवित्र हो जाता है। परन्तु झूठ बोलनेवाला चाहे कितने ही भूषण क्यों न पहिने अपवित्र ही रहता है। अगर किसी वर्तन में कोई मैली चीज रख दो और उसे अच्छे वस्त्र से ढाँक दो तो भी उसकी दुर्गन्ध वर्तन को दूषित कर देगी। इसी तरह

गर अच्छे वस्त्र पहिननेवाला मनुष्य भी झूठ बोले तो भी
ोग उसे अपवित्र ही समझेंगे। पवित्र होना चाहो तो
वश्य सत्य बोलो।

जैसे चोर के पाँव नहीं होते इसी तरह झूठ के भी
पाँव नहीं होते अर्थात् झूठ बहुत दिनों तक छिप नहीं
सकता। एक न एक दिन अवश्य प्रकट हो जाता है,
फिर तो झूठ बोलनेवाले की बड़ी दुर्गति होती है। जो
मनुष्य यह समझते हैं कि उनका झूठ कभी प्रकट न
होगा, यह उनकी बड़ी भूल है। क्योंकि सत्य की सदा
जय होती है और झूठ की सदा हार।

झूठ सब पापों का मूल है और सत्य सब पुण्यों की
जड़। अगर हम झूठ बोलना छोड़ दें तो कभी चोरी आदि
बुरे कर्म न करेंगे। जितने बुरे कर्म मनुष्य करता है वे सब
केवल झूठ ही के कारण होते हैं। अगर आदमी झूठ न
बोले तो उसे सदा यह खटका लगा रहेगा कि कहीं मुझ
से कोई पूछ बैठा तो मुझे सत्य सत्य कहना पड़ेगा और बड़ी
लज्जा होगी इसलिए इस बुरे काम को न करूँ। परन्तु
झूठ बोलने वाला झट कह उठता है कि मैं बहाना करदूँगा
और बच जाऊँगा। इसलिए अन्य पापों से बचने के लिए
झूठ से अवश्य बचना चाहिए।

अगर तुम झूठ से बचना चाहते हो और सत्य क
ग्रहण करना चाहते हो तो तुमको चाहिए कि ईश्वर क
ध्यान करो और उसे हर पल, और हर जगह अप

विद्या धन तुम्हारे पास है। विद्या धन में ग्रीर इतनी विशेषता है कि ग्रीर धन तो ख़र्च करते करते दिन समाप्त हो जाते हैं परन्तु विद्या धन . बढ़ता है। जितना जितना तुम विद्या धन को दूसरे को दोगे उतना ही यह धन बढ़ेगा।

संसार के सब काम विद्या ही से चलते हैं; बिना के हम कुछ नहीं कर सकते। देखो रेलगाड़ी, तार, वग़ैरः लोगों ने विद्या के बल से ही बनाये हैं। यदि विद्या न पढ़ते तो न कपड़ा बुन सकते, न मकान सकते ग्रीर न खेती-बारी ग्रादि ही कर सकते। जो विद्वान् नहीं हैं वे ग्राजतक नंगी रहती, पत्तियाँ ग्रीर जङ्गलों में रहती हैं। न उनके पास कपड़े मकान। देखो विद्या के बिना उनकी कितनी दुर्गति विद्या ही के बल से लोग ज़मीन के भीतर से सोना निकाल कर धनी बन जाते हैं। विद्या के द्वारा कोस बैठे हुए ग्रपने इष्ट-मित्रों से पत्र-द्वारा बात-चीत सकते हैं। प्राचीन लोगों का इतिहास भी विद्या हम तक पहुँचता है; इसलिए विद्या सबसे बड़ी चीज़ है

विद्या केवल पुस्तकों के पढ़ने से ही प्राप्त नहीं किन्तु चीज़ों को भली प्रकार देखने से भी। जो लोग किताबों के ही कीड़े हैं ग्रीर संसार की चीज़ों का लोकन नहीं करते उनको पूरी विद्या नहीं ग्रगर हम विद्या चाहते हैं तो किताबों को पढ़कर उन विचार करें कि जो कुछ उनमें लिखा

आँख जिससे हम देखते हैं, यह कान जिससे हम सु
यह नाक जिससे हम सूँघते हैं, यह हाथ ...
हैं, यह ज़ुबान जिससे हम पढ़ते हैं सिवाय ईश्वर के
कौन बना सकता था ।

आहा! देखो ईश्वर कितना बड़ा है । इसने
विचित्र चीज़ें बनाई हैं । सूर्य जो ज़मीन से कई
गुना बड़ा है इसी ईश्वर ने बनाया है। अगर ईश्वर
न बनाता तो हम मारे जाड़े के मर जाते। ज़मीन पर
ही अँधेरा होता और वृक्ष आदि कुछ भी न उग
रात को आकाश में जो सुन्दर सुन्दर दीपक से
हैं और जिनको हम तारे कहते हैं वे भी ईश्वर ने ही
हैं । बड़े बड़े समुद्र जिनमें जहाज़ पर बैठ कर हम
करते हैं ईश्वर ने ही बनाये हैं । मेंह जिससे हमारी
बारी होती है ईश्वर ही बरसाता है ।

आहा देखो ईश्वर ने हमारे ऊपर कैसा उपकार कि
है । हमारे उत्पन्न होने से पहले ही ईश्वर ने हमारी म
की छाती में दूध उत्पन्न कर दिया, जिससे हम भू
मरें । ज्यों ज्यों हम बड़े होते गये हमको सब ज़रूरी ज़
चीज़ें वही देता गया । उसी ने हमारी रक्षा की । उस
हमको जीवन दिया । इसलिए हमको भी चाहिए
जैसे ईश्वर हमको प्यार करता है ऐसे ही हम भी उ

है। परन्तु ईश्वर हमसे कुछ माँगता नहीं। हम उसे
र सकते हैं। हमारे प्यार करने की यह विधि है कि
उसको धन्यवाद दें। जो मनुष्य हमको एक पैसा
दे तो भी हम उसको धन्यवाद देते हैं तो क्या जिस
र ने हमें इतनी चीज़ें दी हैं उसका धन्यवाद हमको
करना चाहिए। देखो कुत्ता भी टुकड़ा डालने से अपने
लक की ओर पूँछ हिलाता है। फिर हम तो मनुष्य हैं।
तो ईश्वर का अवश्य ही धन्यवाद करना चाहिए।

दूसरी बात यह है कि हमको ईश्वर की आज्ञा का
न करना उचित है। ईश्वर अच्छे अच्छे कामों को
ता और बुरे कामों से घृणा करता है। इसलिए हम
छे अच्छे कामों को करें और बुरे कामों के पास भी न
दें। नहीं तो ईश्वर हमको दण्ड देगा। जैसे हमारे
ा हमको झूठ बोलने, विद्या न पढ़ने, चोरी करने आदि
कामों पर सज़ा देते हैं इसी प्रकार हम सबका पिता
सत्य बोलने, विद्या पढ़ने आदि श्रेष्ठ कामों से प्रसन्न
कर हमको सुख देता है और दूषित कर्म करने वालों
र अप्रसन्न होकर उनको दुःख देता है।

ईश्वर सब जगह है और सबके हृदय की बात को
नता है इसलिए हमको उसका हमेशा भय रखना
हिए और कभी मन में भी बुरे कामों को न विचारना
हिए।

सरकारी कोतवाल तो हमको बुरा काम करते हुए ही
पकड़ेगा परन्तु ईश्वर तो मन में बुरा विचार करने वाले

को भी पकड़ लेगा । ईश्वर के न्याय से हम कं
बच गये हैं । इसलिए उससे सदा डरना चाहिए ।

देखो ईश्वर हमारा पिता है तो हम सब भाई
हुए । इसलिए भाई भाई को प्रेम के साथ रहना च
और किसी को कष्ट नहीं देना चाहिए । जिस प्रकार
एक लड़का अपने भाइयों को कष्ट देता है तो उसका
उससे क्रुद्ध होता है क्योंकि पिता का प्रेम तो सब प
ही है, इसी प्रकार परमात्मा का प्रेम हम सब पर तु
यदि हममें से कोई एक दूसरे को सतावेगा तो ई
पर कोप करेगा ।

सबसे पवित्र और अच्छी चीज़ दुनिया में ईश्
है, इसलिए जो मनुष्य ईश्वर से हित करते हैं और उ
आज्ञा मानते हैं वे भी पवित्र और अच्छे हो जाते हैं,
जो मूर्ख ईश्वर से विमुख रहते हैं वे जन्मजन्मान्तर
और दुःखी रह कर अधोगति को प्राप्त होते हैं ।
हमको चाहिए कि अवश्य ईश्वर की उपासना किया
क्योंकि हमारे सब कामों के फल का देने हारा ईश्वर
ईश्वर से ही हर काम की पूर्ति की प्रार्थना करनी च
वही हमको इम्तहान में पास करावेगा, वही हमको
देगा । जब हम किसी कार्य्य को करने बैठें तब ईश्
प्रार्थना करलें । इससे दो लाभ होंगे । एक तो यह
कोई कुचेष्टा न करेंगे । दूसरे हमारा उत्साह अच्छे
करने में होगा । इसीसे हमारा काम सफल होगा ।

५—पवित्रता

पवित्रता शुद्धि का दूसरा नाम है। यह दो प्रकार की
ा है एक भीतरी दूसरी बाहरी। बाहरी शुद्धि शरीर
सम्बन्ध रखती है। शरीर को शुद्ध रखना और उसको
ा न होने देना शारीरिक शुद्धि कहलाती है। तुमने
वेरे उठ कर देखा होगा कि रात के वक्त सोने से हमारे
रीर में मैल जम जाता है। आँखों में कीचड़ और नाक,
ान तथा मुख में कुछ दुर्गन्धि भी प्रतीत होती है। यही
पवित्रता है। इससे हमारे चित्त को कष्ट पहुँचता है इस
िए हम स्नान आदि से शरीर को शुद्ध कर लेते हैं। उसी
समय चित्त में शान्ति आजाती है। इसी को पवित्रता
कहते हैं। जो लोग बहुत दिनों तक नहीं नहाते वे शीघ्र
बीमार पड़ जाते हैं क्योंकि उनके रोंगटों में मैल जम जाता
है और शुद्ध वायु भीतर से बाहर और बाहर से भीतर नहीं
आजा सकता। इसलिए हमको मालूम होगया कि शरीर
की शुद्धि से चित्त को शान्ति रहती है और स्वास्थ्य ठीक
रहता है।

शारीरिक शुद्धि के लिए केवल नहाना ही ज़रूरी नहीं
है किन्तु अपने वस्त्र आदि भी पवित्र रखने चाहिएँ। देखे
अगर कोई मैले कुचैले कपड़े पहिने हुए तुम्हारे सामने
आवे तो तुम उससे घृणा करोगे। इसी तरह अगर तु
अपने कपड़ों को मैला रक्खोगे तो दूसरे तुमको अपने पा
न बैठने देंगे और तुम्हारे शरीर से दुर्गन्धि आवेगी। य

को भी पकड़ लेगा। ईश्वर के न्याय से हम कभी नहीं बच सकते। इसलिए उससे सदा डरना चाहिए।

देखो ईश्वर हमारा पिता है तो हम सब आपस में भाई हुए। इसलिए भाई भाई को प्रेम के साथ रहना चाहिए और किसी को कष्ट नहीं देना चाहिए। जिस प्रकार अगर एक लड़का अपने भाइयों को कष्ट देता है तो उसका पिता उससे क्रुद्ध होता है क्योंकि पिता का प्रेम तो सब पर तुल्य ही है; इसी प्रकार परमात्मा का प्रेम हम सब पर तुल्य है। यदि हममें से कोई एक दूसरे को सतावेगा तो ईश्वर हम पर कोप करेगा।

वस्त्र पहिनता है पर जिसके ख़यालात बुरे हैं, जो दूसरों से बैर रखता है, लोगों को हानि पहुँचाता है और जिसका मन अन्य कुचेष्टाओं में लगा रहता है वह उस सोने के घड़े के समान है जिसमें विष भरा हुआ है। तुमको उचित है कि कभी अपने हृदय को बुरे विचारों से दूषित न करो तुम्हारे हृदय में परमात्मा का वास है। कवि कहता है कि

"जाके हृदय साँच है ताके हृदय आप।"

अगर तुम अपने इस हृदयरूपी मकान को अपवित्र करोगे तो ईश्वर तुमसे अप्रसन्न होगा और लोग भी तुमसे घृणा करेंगे।

६—आशा

यह कहावत बड़ी मशहूर है कि दुनिया ब-उम्मेद क़ायम अर्थात् संसार की स्थिति आशा से है। यदि मनुष्य निराश हो जायँ तो एक मिनट भी जीना दुर्लभ हो जाय। संसार के जितने काम चल रहे हैं वे सब आशा के ही सहारे से।

देखो एक लड़का सवेरे उठकर पाठशाला जाता है तमाम दिन बड़ी मेहनत करता है और रात को दीपक के सहारे किताबों को पढ़ता है। गर्मी पड़ रही है, नींद आ रही है, कीड़े सताते हैं, परन्तु वह पढ़ता ही चला जाता है। भला कोई पूछे कि वह इतनी बड़ी मेहनत क्यों कर रहा है तो इसका यही उत्तर मिलेगा कि उसे इम्तहान में पास होने की

आशा है। यदि उसे यह आशा टूट जाय तो यह एक पल
भी किताब नहीं पढ़ सकता।

देखो माता-पिता अपने पुत्र को किस तरह पाल रहे हैं
और उसके लिए कितना कष्ट उठाते हैं। बिचारी मा रात
दिन लिये लिये फिरती है। अगर यह बीमार हो जाता है
तो खड़ी खड़ी रात भर जगती है। पिता बड़े कष्ट से रुपया
कमा कर लाता और बच्चों को खिलाता है। जब ये बड़े होते
हैं तो मदर्से भेजता है। मोटा मोटा आप खाता है और
अच्छा अच्छा बच्चों को खिलाता है। भला वह यह कष्ट क्यों
उठा रहा है। इसका साफ़ जवाब यह है कि उसे आशा
है कि ये बच्चे बड़े होकर उसको सुख देंगे।

देखो एक इंजिनियर ने बड़ी भारी रेल की
सड़क का ठेका लिया है। उस बिचारे को कई कोस तक
सड़क बनानी है, नदियों पर पुल बनाने हैं, ऊँची, नीची
ज़मीन को साफ़ करना है। और भी ऐसी बीसियों मुश्किलें
हैं परन्तु वह अपने काम में लग रहा है। रोज़ थोड़ा थोड़ा
करता जाता है। आज एक गज़ बनी, कल दो गज़। लोग
पूछते हैं कि तुम इतना परिश्रम क्यों कर रहे हो। वह कहता
है कि मुझे आशा है कि एक न एक दिन मेरा काम समाप्त
हो जायगा। अगर उसकी यह आशा टूट जाय तो आज
वह काम छोड़ दे।

एक पथरफट को पहाड़ काट कर नहर निकालनी है।
बिचारा अपनी किरनी बसूली लिये पत्थर काट रहा है।

कोसों लम्बा इतना बड़ा पहाड़ सामने है और वह विचा
छोटा सा आदमी ! थोड़ा थोड़ा रोज़ काटता है । ए
दिन हुआ, दो दिन हुए, तीन हुए, चार हुए । ओहो ! अभ
तो कुछ भी नहीं कटा। लोग चकित हैं कि क्या यह काट लेग
पर उसे तो आशा लग रही है कि एक न एक दिन अवश
पहाड़ कटेगा और नहर निकलेगी । यह आशा ही है
उसको काम में लगा रही है ।

वास्तव में आशा बड़ी चीज़ है। इसके सहारे हम कठि
से कठिन कामों को सुगमता से कर सकते हैं । चाहे
बार हमको सफलता प्राप्त न भी हो तो भी यदि आशा ब
रहे तो उसके आश्रय हम क्या कुछ नहीं कर सकते। पर
यदि आशा न हो तो एक पग उठाना भी मुश्किल हो जा
है । निराश हो कर ही लोग विष खा लेते हैं और निर
हो कर ही प्राणघात किया जाता है । आशा से जीवन
सुख और निराशा से दुःख होता है । आशा से हम
सम्बन्ध भविष्य काल के साथ जुड़ जाता है और निरा
से टूट जाता है ।

जब हमको मालूम हो गया कि आशा हमारे जी
के लिए ऐसी लाभदायक है तो ऐसा यत्न करना चा
कि आशा बँधी रहे । पर आशा रखने के लिए ज़रूर
कि हम ऐसे कार्य करें जो हमारी शक्ति में हों । जो
अपनी शक्ति से बाहर काम उठा लेते हैं उनको सफ
नहीं होती और जब कई बार असफलता हो तो
टूट जाती है और झुँझ ही झुँझ शेष रह जाता है ।

हमारे सब काम पूरे होते चले जायँ तो नित्य प्रति आशा बढ़ती जाती है। जो कप्तान पहली लड़ाई हार जाता है उसका दिल टूट जाता है और जो लड़का पहले ही इम्तहान में फेल हो जाता है उसका आगे को उन्नति करना दुर्लभ है। इसलिए आशा बाँधने के लिए सबसे पहली बात यह है कि हम वित से बाहर कोई काम न कर उठें।

आशा को क़ायम रखने के लिए ईश्वर-विश्वास की भी आवश्यकता है। जिसके ऊपर सहायता के लिए कोई बल-वान् मनुष्य हो उसका दिल बढ़ा रहता है। इसी प्रकार जिस मनुष्य का ईश्वर पर विश्वास है वह यह समझता है कि मेरी सहायता के लिए एक बड़ी शक्ति उपस्थित है और इस तरह उसकी आशा बँधी रहती है।

कभी ऐसी चीज़ की आशा न करना चाहिए जो असंभव हो। क्योंकि ऐसा करने से शीघ्र अपने किये पर पछताना पड़ेगा। ऐसी आशा भी न करो जिसके होने में तुम्हें निश्चय न हो। बहुत से मनुष्य अनिश्चित आय की आशा करके अपना व्यय बढ़ा लेते हैं पर जब उनकी यह आशा पूरी नहीं होती तो सिर पीट कर रोते हैं। ऐसा कभी न करना चाहिए। बादल को देखकर घड़े फोड़ना मूर्खता है।

७—सत्सङ्ग

यह बात सब जानते हैं कि मनुष्य की ऐसी प्रकृति है कि वह दूसरों के सङ्ग को ढूँढ़ता है। दुनिया में कोई

मनुष्य ऐसा न मिला होगा जो अकेला रहना चाहे। अन्य जीव-जन्तु ते ऐसे हैं जो अकेले रह कर अपनी गुज़र कर सकते हैं पर मनुष्य ऐसा विचित्र जीव है कि जिसके लिए बहुत से हाथों की सहायता चाहिए। एक अन्न को ले लो। क्या एक मनुष्य अपने लिए अन्न उत्पन्न कर सकता है? जो रोटी हम खाते हैं उसके बनाने में वस्तुतः सैकड़ों मनुष्यों के हाथ लगे होंगे। यदि आप भले प्रकार ऐसा विचार करें तो ज्ञात होगा कि पहले किसान ने खेत को जोता—जोतने में हल की ज़रूरत पड़ी। यह हल लकड़ी और लोहे का बना हुआ है, जिसमें कई बढ़इयों और लुहारों को काम करना पड़ा था। जब खेत जुत गया तो बीज लाने, खेत में डालने, पानी देने, रक्षा करने आदि में देखो कितने मनुष्यों की ज़रूरत पड़ी। फिर काटना, भूसा अलग करना, बाज़ार को ले जाना, बेचना इत्यादि कई ऐसे काम हैं जिनके पश्चात् हम तक अन्न आता है। इस अन्न के लिए चक्की बनाने, इसे पीसने, चालने आटा पकाने आदि में देखो कितने मनुष्यों ने काम किया। अगर यह मनुष्य न होते तो आज यह रोटी जिसको हम अपना कमाया कहते हैं, हम को नसीब न होती। एक रोटी से ही क्या है? कपड़ा, मकान और अन्य चीज़ें केवल सङ्ग से ही हमको प्राप्त होती हैं। यही कारण है कि हम कभी अकेले नहीं रह सकते। हमको सङ्ग के लिए कोई न कोई अवश्य चाहिए।

सङ्गत में रहता है तो उसे लोग बुरा ही समझेंगे चाहे वह अच्छा ही क्यों न हो ? इसी तरह यदि एक दुष्ट मनुष्य भी अच्छे मनुष्यों के मध्य में रहता हो तो लोग उसे अच्छा ही समझते हैं । यह बात प्रसिद्ध है कि कोयलों की दलाली में हाथ काले । अगर कोई चाहे कि मैं बुरी सङ्गत में रहता हुआ भी अच्छा बना रहूँ तो यह बात ऐसे ही असम्भव है जैसे हवा चलने पर उससे कोई पत्ता न हिले ।

खर्बूज़े को देख कर खर्बूज़ा रंग बदलता है । इसी तरह एक मनुष्य को देख कर दूसरा मनुष्य कार्य करता है । यदि तुम्हारे पास ऐसे लोग रहते हैं जो नित्य प्रति पठन-पाठन में लगे रहें तो कभी न कभी तुम भी उधर को ध्यान देने लग जाओगे । परन्तु यदि वे लोग मद्य पीते, जुआ खेलते और अन्य दुष्ट कर्म करते हैं तो एक न एक दिन तुम भी उन्हीं में मिल जाओगे । इसलिये अगर बुरे कामों से बचना चाहते हो तो बुरी सङ्गत से बचो ।

बुरी सङ्गत से केवल बुरे गुण ही हम में नहीं आ जाते किन्तु बहुधा हम निर्दोष भी विपत्तियों में फँस जाते हैं । कल्पना करो कि तुम चोरों के मध्य में रहते हो एक बार चोरी हो गई । सब चोर पकड़े गये ; अब सम्भव है कि उनके झपट्टे में तुम भी आ जाओ कि तुम उनके साथ

छोड़ न सको तो अपना चलन इस प्रकार का कर लो कि बुरे आदमियों के दुष्ट गुणों का तुम पर प्रभाव न पड़ सके। सदा नेक काम करते रहो और दुष्ट आदमियों को धीरे धीरे समझाते रहो। इस तरह पहले तो तुमको कठिनाई होगी। परन्तु थोड़े ही दिनों में तुम्हारी दुष्ट सङ्गत ही सत्सङ्गत हो जायगी।

८—प्रेम

प्रेम अर्थात् स्नेह संसार की शक्तियों में सबसे प्रबल है। जो काम किसी शक्ति से नहीं हो सकते उनको प्रेम से कर सकते हैं। कहा जाता है कि प्रेम से लोहा भी मोम हो जाता है। सब संसार केवल प्रेम की ही डोरी में बँधा पड़ा है। देखो, घर क्या है? कुछ ऐसे मनुष्यों का समूह है जो एक दूसरे से प्रेम रखते हैं। इसी प्रकार जाति तथा देश को समझना चाहिए। जिस प्रकार गोंद से पुस्तक के सब पृष्ठ जुड़े रहते हैं उसी तरह प्रेम मनुष्य-जाति के लिए गोंद का काम करता है। यदि प्रेम न हो तो मनुष्य एक दूसरे से लड़ कर मर जायँ!

संसार के सब काम प्रेम ही से चलते हैं। माता रोते हुए बच्चे को केवल प्रेम के वश हो दूध पिलाती है। भाई, बहिन, पति, स्त्री, माता, पिता, यह सब प्रेम का ही ... है। यही प्रेम कहीं माता का रूप रख कर अपने

पुत्र की याद में तड़प रहा है; यही प्रेम देशभक्त का रूप धारण कर देश के लिए कष्ट उठा रहा है। यही प्रेम था जिसने राजा दशरथ को मारा। यही प्रेम था जिसके वश हो लक्ष्मण और सीता राम के साथ वन को चल दिये। यही प्रेम योगियों को ईश्वर-भक्ति में लगाता है और यही प्रेम धर्म के सेवकों को कष्ट सहन कराता है। जिधर देखो उधर यही प्रेम अनेक रूप धारण किये हुए प्रकट हो रहा है।

ऊपर कहा जा चुका है कि जो काम किसी से न हो सके उसको हम प्रेम से कर सकते हैं। प्रेम से अधिक दुनिया में कोई बल नहीं है। प्रेम वह रस्सी है जिसको न तो आग जला सकती है, न पानी गला सकता और न लोहा काट सकता है। बड़े बड़े योद्धा जो तीक्ष्ण से तीक्ष्ण शस्त्र से भी वश में नहीं हो सकते केवल इस सूक्ष्म प्रेम से ऐसे बँध जाते हैं कि पीछा नहीं छुड़ा सकते। देखो, एक सेनापति को, जिसको सदा मार-धाड़ से ही काम पड़ता है, वह बड़ा वीर होता है और किसी की एक बात भी नहीं सह सकता। यदि बड़े से बड़ा आदमी भी उसे गाली दे तो वह क्रुद्ध होकर झट उसका सिर काट दे। परन्तु वही शस्त्रधारी मनुष्य अपने बच्चे को गोद में लिये हुए है जो तुतला तुतला कर उसे गालियाँ दे रहा है, परन्तु यह वीर प्रेम की डोरी में ऐसा बँधा है कि उसका शस्त्र इस बच्चे पर नहीं उठ सकता। देखो राजा अपने सारे राज्य में अकेला होता है। यदि प्रजा चाहे तो

ने झट मार डाले। पर यह उसका प्रेम ही है जो इतने बड़े राज्य पर शासन करने को उसे समर्थ बनाता है।

प्रेम सुख का मूल है जिस घर के लोग एक दूसरे के साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं उनको दरिद्र और निर्धन होते पर भी कभी दुःख नहीं होता। परन्तु जिस घर में प्रेम नहीं वह धनवान् होकर भी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। जब दो मनुष्यों में प्रेम होता है वे एक दूसरे के हित के लिए परिश्रम करते हैं और इस प्रकार दोनों का हित साथ साथ होता जाता है। परन्तु दो आपस में फूट रखनेवाले मनुष्य जल्दी नष्ट हो जाते हैं। देखो, कौरव और पाण्डवों के नाश का कारण केवल फूट ही थी। पृथ्वीराज और जयचन्द की फूट ने ही भारतवर्ष की यह दुर्गत बनाई। जिस जिस देश ने जब जब उन्नति की है वह प्रेम ही का कारण है। देखो आजकल इंगलिस्तान आपस के प्रेम ही के कारण संसार भर पर राज कर रहा है। इसलिए जो मनुष्य भला चाहते हैं उनको चाहिए कि एक दूसरे से प्रेम करें।

प्रेम के लिए सबसे बड़ी बात यह है कि हम दूसरों का उपकार करना सीखें। क्योंकि जो मनुष्य अपना ही ... प्रेम के भागी नहीं हो ... र धर्मात्मा मनुष्यों में ... दिखलाने को तो एक ... प्रयोजन की सिद्धि ... इससे प्रेम नहीं

कर के रात को सुख की नींद सोते हैं। पर जो लोग काम नहीं करते उनकी बुरी गत होती है।

दृष्टान्त के लिए हमारे यहां के रईसों को लेलो। इन लोगों के पास धन बहुत है। ये बिना काम किये भी चुपड़ी रोटी खा सकते हैं इसलिए इन्होंने ठान लिया है कि हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें और फली तक न फोड़ें। इसका परिणाम यह है कि यह बिचारे ८ बजे तक तो पड़े सोते रहते हैं। उठे, इधर उधर डोले, गपशप की, अच्छे से अच्छा खाना निगला और फिर चारपाई पर गिर, दिन ढला, यार-दोस्त आगये और लगी फिर गपशप उड़ने, शिकायत है तो यह कि दिन बड़ा होता है। काटे नहीं कटता, लाओ ताश ही खेलो, शतरञ्ज में ही जी बहलाओ, ज्यों त्यों कर के शाम हुई, हुज़ूर का पैर तो धरती पर लगता नहीं, गद्दी से उतरे बग्गी पर और बग्गी से उतर तो गद्दी पर। रात हुई, खाना खाया, फिर सो गए, न इन्हें यह खबर है कि किसी के घर में खाने को है या नहीं, न ये यह जानते हैं कि संसार में क्या हो रहा है। सोना न हुआ शैतान की आंत भला नींद कहां से आवे, घड़ी दो घड़ी होतो हो, रात-दिन सोना ही सोना, चारपाई पर पड़े पड़े स्वप्न देखते हैं। फिर यह शिकायत है कि खाना हज़म नहीं होता। काम करते नहीं, खाये ही जाते हैं उस पर पाचक चूर्ण और दवाओं की भरती। एक दिन होतो हो, दवाएँ बिचारी क्या करें। अन्त में वे भी थक जाती हैं। जिन लोगों

रहते हैं और दुःख उठाते हैं। इसका कारण क्या है? उद्यम का न करना!

इसके विरुद्ध उन लोगों की हालत देखो जो सवेरे से उठकर काम करते हैं। इनको फ़िक्र है कि यदि वे काम न करेंगे तो खाना कहाँ से मिलेगा। बहुत तड़के उठे-नित्य-कर्म किया और लगे उद्यम करने। दोपहर के बारह बजे ख़ूब भूक लग रही है। खाना खाया तो बड़ा स्वादिष्ट। क्योंकि भूक में तो किवाड़ भी पापड़ होते हैं। फिर लगे काम करने, जो कुछ खाया था हज़म हो गया, खाना हज़म होने से ख़ून बना और शरीर की पुष्टि हुई, दिन भर काम करते करते थक गये, इसलिए चारपाई पर पड़ते ही सो गये। एक ही करवट में सवेरा हो गया। ओ हो। कैसा सुख का जीवन है। न दवाओं की ज़रूरत, न रोग की शिकायत, दण्ड पेलते हैं और मौज करते हैं। वस्तुतः काम में ही आनन्द है।

काम लोगों को केवल सुखी ही नहीं रखता किन्तु बुरे भावों से भी बचाता है। तुम जानते हो मनुष्य नित्य-प्रति अच्छा या बुरा कुछ न कुछ काम करता ही रहता है। चाहे शरीर से, चाहे वाणी से और चाहे मन से। जिन लोगों को हम टठुआ कह कर पुकारते हैं वे वास्तव में मन से ही कुछ न कुछ विचारते हैं। किसी ने सच कहा है कि सबसे कठिन या यों कहो कि असंभव काम किसी काम का न करना है। जब हम को यह ज्ञान हो गया कि हम बिना किसी न किसी काम के एक पल भी नहीं रह

करते तो हमारी दोही दशा होंगी या तो हम बुरा काम करेंगे या भला। जो लोग भला काम नहीं करते वे बुरा अवश्य करते हैं। यही कारण है कि ठाली आदमी बुरी बुरी बातों को सोचता रहता है। ताश गंजीफ़ा की उसी को सूझती है। जिसके पास करने को कोई अच्छा काम नहीं। अंग्रेज़ लोग सच कहा करते हैं कि अगर तुम्हारे पास करने को कोई भला काम नहीं तो शैतान तुमको काम दे देगा अर्थात् तुम बुरी बातें करने लग जाओगे। इसलिए सबसे अच्छी रीति बुराई से बचने की यह कि हम नित्य कुछ न कुछ उद्यम करते रहें।

कहा जाता है कि बिना चलाई हुई लोहे की चाबी को काई खा जाती है परन्तु चलती हुई चाबी साफ़ और चमकीली रहती है। बस यही हाल शरीर का है। अगर इस से काम न लो तो यह दुर्बल हो जायगा। तुमने देखा होगा कि बहुत से फ़क़ीर अपने हाथ को नित्य ऊपर को किये रहते हैं थोड़े दिनों में लोहू का बहना बन्द होकर वह हाथ सूख जाता है। इसीतरह जिस अंग से तुम काम करना छोड़ दोगे वही निर्बल हो जायगा। आँख से कई मास तक न देखो फिर आँख से कोई वस्तु दिखाई न पड़ेगी। ज़बान से बहुत दिनों तक न बोलो। ज़बान में बोलने की शक्ति भी नहीं रहेगी। ईश्वर ने हमको शरीर इस लिए नहीं दिया कि उसे कोमल घोड़े की तरह चारपाई पर ही डाले रक्खें। ईश्वर कहता है कि अगर तुम शरीर से पूरी पूरी मिहनत न लोगे तो मैं इसे छीन लूँगा। जो

लोग मिहनत नहीं करते उनको रोग गले पड़जाते हैं ग्रैार बूढ़े होने से पहले ही मर जाते हैं। देखो अंग्रेज़ लोगों ग्रैार हमारे भारतवर्ष के रईसों में कितना भेद है। एक अंग्रेज़ चाहे कितना ही धनवान क्यों न हो हमेशा उद्यम करता रहता है। कभी घोड़े पर चढ़ता है, कभी जंगलों में फिरता है। कभी क्रिकेट खेलता है, कभी यह करता है, कभी वह करता है। निचला कभी नहीं बैठता। इसीलिए वह फुरतीला ग्रैार नीरोग रहता है। ग्रगर हम तन्दुरुस्ती चाहते हैं तो ग्रवश्य उद्यम करते रहें।

देखो समय काम से ही जाना जाता है। जिस दिन तुम कुछ काम नहीं करते वह तुम्हारे लिए न होने के समान है। जो मनुष्य संसार में आकर बहुत सा काम करगये हैं उनके जीवन हमको बहुत बड़े मालूम होते हैं पर जो लोग कुछ नहीं कर गये उनके जीवन पर दृष्टि डालने से हमको कुछ पता नहीं चलता। इसलिए ग्रगर हम ग्रपने जीवन को बड़ा बनाना चाहते हैं तो हमको उद्यम करना चाहिए। जितने बड़े बड़े पुरुष दुनिया में हो गये हैं वे बड़े उद्यमी थे। काहिलों ने संसार में कुछ नहीं किया, जो कुछ किया है वह उद्यमी पुरुषों ने।

१०—माता-पिता की सेवा

देखो जब तुम्हारा जन्म हुआ था, तब तुम्हें। कुछ भी सुध-बुध न थी। न तुम [illegible] [illegible] का [illegible] न था

न खान पान तथा वस्त्र आदि अपने लिए एकत्र कर सकते थे। जब तुम्हें भूक लगती तो रो पड़ते, जब प्यास लगती तो चिल्ला उठते। ऐसे कठिन समय में जब तुममें चलने फिरने तक की शक्ति न थी जब परमात्मा ने तुम्हारी रक्षा के लिए तुम्हारे माता-पिता को नियत किया। उन्होंने हर तरह की मुश्किल सह कर तुम्हारा पोषण किया।

देखो, तुम्हें तो उस दिन का स्मरण नहीं जब तुम ह्वाउ ह्वाउ करते थे और शुद्ध शब्द तक मुख से नहीं निकलता था। तब तुम बैठ भी नहीं सकते थे। और तो और तुमसे अपने मुख की मक्खी तक न उड़ती थी। ऐसी दशा में सिवा माता के संसार में तुम्हारा कौन था? उसी माता ने तुमको अपनी गोद में लिया, अपनी छाती से दूध पिलाया। नरम नरम गद्दों पर सुलाया, आप खरारे में सोती पर तुमको बिस्तर पर ही सुलाती। गर्मी में रात भर पंखा झलती, लोरियाँ देती, मुख चूमती और तुमको खुश रखती।

देखो, जब तुम बीमार पड़ते तब तुम्हारे माता-पिता को जो कष्ट होता उसका बयान लेखनी की शक्ति से बाहर है। मारे चिन्ता के न खाते हैं न पीते हैं। यही धुन है कि तुम अच्छे हो जाव। इस हकीम पर जा, उस डाक्टर पर जा, किसी के हाथ जोड़, किसी के पैर पकड़, जैसे हो सके दवा लाते और तुम्हें पिलाते। रात को जो तुम्हारी आँख लग गई तो उनको भी चैन पड़ गई। नहीं तो सवेरा हो गया और पलक से पलक न लगी। तुमको रात भर खड़े खड़े रखते हैं। टांगें रह जाती हैं।

अपनी थकावट का ख़याल नहीं। चिन्ता है तो यह कि तुमको चैन मिले। कहीं ऐसा न हो कि तुम रो उठो।

देखो, तुम्हारी .खुशी में माता-पिता की .खुशी है और तुम्हारे रञ्ज में रञ्ज। अगर तुम मुसकराते हो तो वे हँस पड़ते हैं। जब तुम्हारी मुरझाई सूरत देखते हैं तब उनका भी हृदय कुम्हला जाता है। ज़रा तुम्हारी सूरत बहाल देखी हर्ष के मारे फूल गये। ज़रा तुमको उदास पाया काँटे के समान सूख गये। भला माता-पिता से अधिक कौन तुम्हारे हित का चाहनेवाला होगा। वे आप ख़राब खाना खाते हैं पर तुमको अच्छा खिलाते हैं। आप मोटा झोटा पहनते हैं पर तुमको अच्छा पहनाते हैं। जहाँ तक हो सकता है तुम्हें .खुश रखते हैं।

देखो, तुम्हारी माता तो तुम को पिता से भी अधिक प्यार करती है। तुम उसीके पास सोते हो, उसीके साथ खाना खाते हो। वही तुम्हारी हरदम रक्षा करती है। एक मिनट तुमको आँखों से ओझल नहीं होने देती। तुम्हारे पाख़ाना पेशाब को वही साफ़ करती है। तुम्हारा तो हिसाब ही निराला है। तुम न आव देखते हो न ताव; जहाँ चाहते हो पेशाब कर देते हो, जहाँ चाहते हो पाख़ाना फिर देते हो। यदि रात को तुम्हारी माता के वस्त्र भीग जाते हैं तो वह तुम्हारे नीचे सूखा वस्त्र करके स्वयं भीगे पर पड़ रहती है पर तुम्हें दुःख नहीं देती।

देखो अब तुम कुछ बड़े हो जाते हो और पैरों चल [illegible] माता-पिता को बड़ा [illegible] है।

वे तुम्हारी तोतली बतियाँ सुन कर फूले नहीं समाते। एक तुम हो कि घड़ी घड़ी पर हठ करते हो। रोते हो, पीटते हो, पर चीज़ लेकर ही छोड़ते हो। जब और बड़े हो गये तब माता-पिता ने कष्ट उठा कर तुम्हें मदसे बिठाला। वे तो एक एक कौड़ी जोड़ कर कमाते हैं और तुम बेधड़क खर्च करते हो। दो पैसे का खोंचा खा लिया, चार पैसे की बर्फ़ खा डाली। एक पैसा इसको दे दिया, एक पैसा उसको। महीना हुआ और तुम्हारे माता-पिता जहाँ से हो सके तुमको देते ही हैं। और तुम उन्हीं के भरोसे पर छैल-चिकनिये बने फिरते हो।

देखो तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हारे साथ इतना किया है तो तुमको भी विचारना चाहिए कि तुम्हारा क्या कर्तव्य है। वास्तव में तुम्हारे ऊपर उनका बड़ा भारी ऋण है जिसको दिये बिना तुम अपने जीवन में सफल नहीं हो सकते। परन्तु इतने बड़े ऋण का चुका देना तो तुम्हारी शक्ति के बाहर है। हाँ, यह कर सकते हो कि तुम उनकी सेवा करो; उन्हें ख़ुश रक्खो जिससे वे इस ऋण को माफ़ कर दें। तुमको चाहिए कि जब तुम छोटे हो तो जो कुछ नेक आज्ञा वह दें उसका पालन करो, कभी उनकी आज्ञा से बाहर न हो। जिस जगह जाने को वे तुमसे निषेध करें वहाँ न जाओ। जो काम करने को कहें वह करो। जिस जगह बैठने से तुम्हें रोकें वहाँ न बैठो। हर तरह से उनको सुख पहुँचाओ।

देखो, श्रीमहाराज रामचन्द्रजी का नाम तो तु
सुना ही होगा। उन्होंने केवल पिता की आज्ञा पालन
सारा राज्य छोड़ दिया। बस्ती को छोड़ कर जङ्गल
जा बसे। सुख को त्याग दुःख उठाया, पर पिता की आ
से मुँह न मोड़ा। इसीलिए उनका नाम आज तक च
आता है। अगर तुम भी इसी तरह अपने माता-पिता
आज्ञा पालोगे तो बड़े आदमी हो जाओगे।

जब तुम बड़े हो जाओ और कमा सको तब ह
तरह से माता-पिता की सेवा करो। उन्हें किसी प्रकार
का कष्ट न पहुँचे। अपने से अच्छा खिलाओ और अपने
से अच्छा पहनाओ। माता पिता की सेवा में ही तुम्हारा
कल्याण है। जब वे सुखी रहेंगे तब तुमको आशिष देंगे
और तुम फूल फल जाओगे। सच मुच माता पिता की
आशिष में बड़ा बल होता है।

देखो, जो लोग माता-पिता को कष्ट देते हैं और
उनकी सेवा नहीं करते वे बड़े अधम और धूर्त हैं। उनके
माता-पिता उनको आशीर्वाद न देंगे और वे कभी फूलें
फलेंगे नहीं। हा! कैसे धूर्त हैं वे मनुष्य जो अपने माता
पिता को कष्ट देते हैं। भला जब वे अपने जन्म देने
हारों का भी हित नहीं करते तब फिर किसका हित
करेंगे। इन निर्लज्जों को शर्म नहीं आती कि जिन्होंने
उनके साथ इतना सलूक किया; जिन्होंने उनके लिए इतने
कष्ट उठाये, उन्हीं के साथ उनका यह व्यवहार! ऐसे

मनुष्यों से सदा घृणा करनी चाहिए और कभी इनके पास न बैठना चाहिए।

जो लोग अपने माता-पिता की आज्ञा नहीं पालते उनकी सन्तान भी आज्ञाकारी नहीं होती। जो जिसके लिए कुआँ खोदता है वही उसमें गिरता है। आज ये अपने माँ-बाप को दुःख दे रहे हैं और उनके लड़के देख रहे हैं। कल वही लड़के बड़े होकर इनको सतावेंगे। जो जैसा करता है वह वैसा पाता है। जब इन्होंने अपने माता-पिता की सेवा न की तब इनकी सन्तान इनकी सेवा कैसे करेगी। आज इन्होंने माँ-बाप को कौड़ी कौड़ी को तरसाया है, कल इनके लड़के इनको तरसावेंगे। देखो शाहजहाँ बादशाह ने अपने बाप के साथ विरोध किया था उसी का यह परिणाम हुआ कि शाहजहाँ को उसके लड़के औरङ्गज़ेब ने बुढ़ापे में क़ैद किया।

जो माता-पिता की आज्ञा नहीं पालते उनसे ईश्वर भी अप्रसन्न रहता है। क्योंकि ईश्वर की यह आज्ञा है कि माता-पिता की सेवा करो। जब तुम अपने माता-पिता की भी सेवा नहीं कर सकते तब परमपिता परमात्मा की आज्ञा कैसे पाल सकोगे? अगर कल्याण चाहते हो तो जहाँ तक हो सके अपने माता-पिता का ऋण चुकाओ। और सदा उनके आज्ञाकारी पुत्र रहो नहीं तो कुपूत कहलाओगे।

११—स्वास्थ्य

देखो स्वास्थ्य भी कितनी अच्छी चीज़ है। जिसके पा
यह अमूल्य रत्न नहीं वह जीता हुआ भी मुर्दा है। चा
दुनिया की सारी चीज़ें प्राप्त हों पर जब तक स्वास्थ
ठीक न हो कोई चीज़ सुख नहीं देती। एक राज
जो अपने महल में बीमार पड़ा हुआ है उस ग़रीब से जो
अपने झोपड़े में मौज उड़ा रहा है किसी तरह भी अच्छा
नहीं।

तुम जानते हो कि संसार की सब वस्तुयें केवल
एक शरीर के सुख पहुँचाने के ही लिए होती हैं। क्या
खाना, क्या कपड़े, क्या रुपया, क्या मकान, क्या नौकर,
क्या चाकर सब शरीर ही के लिए रक्खे जाते हैं। अगर
शरीर की ही अवस्था ख़राब है तो फिर इनमें से एक
चीज़ भी काम नहीं आ सकती। ज्वर से पीड़ित मनुष्य के
लिए महल क्या सुख पहुँचा सकता है? जिस मनुष्य की
पाचक शक्ति जाती रही उसके लिए उत्तम से उत्तम
भोजन भी फीके हैं। जिसको उठने का सामर्थ्य नहीं
उसको नौकर ही क्या करेंगे। जो गठिया से पीड़ित हो रहा
है उसको धन क्या लाभ दे सकते हैं?

जो चीज़ें स्वास्थ्य ठीक होने पर अच्छी लगती हैं वही
बीमारी की हालत में विष के तुल्य हो जाती हैं। देखो,
साधारणतया लड्डू कैसा मीठा और स्वादिष्ट होता है।

परन्तु ज्वर की अवस्था में वही लड्डू कड़ुवा प्रतीत होता है और हमारा जी उसके खाने को नहीं चाहता। तन्दुरुस्त आदमी को ठंडे वायु में टहलना सुखकारक है, परन्तु रोगी को वही वायु विष का काम करता है। जब हमारी आँखें अच्छी होती हैं तब सूर्य्य का प्रकाश भला मालूम होता है; पर जब आँखें दूखने को आ जाती हैं तब थोड़ा सा भी प्रकाश बुरा मालूम देने लगता है। इसीलिए कहा है कि जीवन का सुख केवल उसी के लिए है जिसका स्वास्थ्य ठीक है।

जिसका शरीर पुष्ट है वही मनुष्य विचार भी सकता है। जो बीमार चारपाई पर पड़ा हुआ पीड़ा के मारे चिल्ला रहा है वह विचारा गूढ़ बातों को कैसे सोच सकेगा। पठन-पाठन और जितने विद्या-सम्बन्धी काम हैं वे सब केवल पुष्ट शरीरवाले ही कर सकते हैं। जो रोगी हैं उनको किताब उठाते ही सिर चकराने लगता है; आँखों में पानी आ जाता है और थकावट हो जाती है। इसलिए जो लोग विद्या-सम्बन्धी कार्य्यों में लगे रहते हैं उनको अपना स्वास्थ्य ठीक रखना चाहिए।

बहुत से लोगों का विचार है कि स्वास्थ्य ईश्वर की दी हुई वस्तु है; हम इसके सुधार के लिए कुछ नहीं कर सकते। बीमारी या तन्दुरुस्ती तक़दीर के खेल हैं, मनुष्य इसमें क्या कर सकता है। किसी अंश में तो यह बात सच है कि जिस मनुष्य का शरीर जन्म से ही निर्बल है वह फिर क्या कर सकेगा। परन्तु बहुत सी बीमारियाँ तो

हम अपने गले आप मँढ़ लेते हैं। बिना भूख के खाना खा लेने अथवा भूख से अधिक खा जाने से रोग उत्पन्न हो जाता है। बहुत से अमीर तो इसी कारण अधिक बीमार रहते हैं। कहा जाता है कि भूखों इतने लोग नहीं मरते जितने अधिक खाने से मरते हैं।

शुद्ध वायु न मिलने, गन्दा पानी पीने और मकानों को अपवित्र रखने से भी रोग उत्पन्न हो जाते हैं। देखो क्वार के महीने में बहुत से लोग क्यों बीमार रहते हैं? इसका कारण यह है कि वर्षा ऋतु के पश्चात् पत्ते-पत्तियों और घास-फूस के सड़ जाने से वायु अशुद्ध हो जाता है और ज्वर को उत्पन्न कर देता है। इसलिए हमको चाहिए कि अगर हम स्वास्थ्य ठीक रखना चाहते हैं तो खाना, पानी और हवा तीनों को शुद्ध रक्खें। जिस मकान में रहें उस के कूड़े करकट को नित्य साफ़ रक्खा करें।

काम न करने और खाली बैठने से भी रोग उत्पन्न हो जाते हैं। क्योंकि खाना तो पचता नहीं। शरीर का रुधिर ख़राब हो जाता है और आदमी बीमार पड़ जाता है। इसलिए स्वास्थ्य ठीक रखने वाले मनुष्य को नित्य प्रति काम करना चाहिए। जिनको बहुत देर तक बैठ कर काम करना पड़ता है उनको चाहिए कि व्यायाम (कसरत) किया करें और सबेरे और शाम को शुद्ध वायु में भ्रमण किया करें।

अधिक सोने से भी स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता और कम सोने से भी शरीर में रोग उत्पन्न हो जाते हैं। क्यों

को ८ या ९ घंटे सोना चाहिए और बड़े आदमियों को भी ६ घंटे से कम न सोना चाहिए। दिन का सोना प्रायः हानि पहुँचाता है। रात को १० बजे से ४ बजे तक सोना स्वास्थ्य के लिए बड़ा उपयोगी है। बहुत से मनुष्य और विशेष कर हमारे रईस रात भर तो नाच देखते हैं और दिन को सोते हैं। ऐसा करने से इनका स्वास्थ्य बिगड़ जात है। वक्त पर थोड़ा सोना भी बे वक्त के बहुत सोने से अच्छा है। बहुत सोने से काहिली आती है इसलिए सारे दिन भर चारपाई पर पड़ा रहना दरिद्र की निशानी है।

हर वक्त उदास रहने से भी स्वास्थ्य बिगड़ जाता है अगर तुमको रंज हो तो उस पर देर तक विचार मत करो। अपने चित्त को किसी दूसरी ओर लगा दो और ऐसी बातें करो अथवा ऐसे मनुष्यों से मिलो जो तुम्हार चित्त बट जाय और उस शोकजनक बात का ध्यान आवे। अगर रंज बहुत बढ़ गया हो तो देशादेशान्तर भ्रमण करना भी उपयोगि होता है।

शराब पीने और मादक द्रव्य खाने से भी बीमारि हो जाती हैं। ईश्वर ने पानी सबसे अच्छी पीने की वस्तु बनाई है। मादक द्रव्य कभी न खाओ, नहीं तो दिमा खराब हो जायगा और विचारशक्ति नष्ट हो जायगी।

क्रोध करने और बुरी बुरी आदतों के ग्रहण करने ... रोग लग जाते हैं। तुमने क्रोधी आदमियों ... नाश न देखा होगा ... क्रोध की ... और ... जाता है। ...

ओषधियाँ खाना भी रोगों का कारण है। जहाँ तक बने सादा भोजन करो और बिना किसी विशेष रोग के ओषधि सेवन मत करो। नहीं तो तुम्हें उनकी आदत पड़ जायगी और बिना उनके तुम एक दिन भी अच्छे न रह सकोगे।

१२—व्यायाम.

यह बात भले प्रकार विदित हो चुकी है कि बिना काम किये स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता और बिना स्वास्थ्य ठीक हुए हमारी विचार-शक्ति नष्ट हो जाती है। हम में से बहुत से आदमी ऐसे हैं जिनको रोटी कमाने के लिए सुबह से शाम तक बड़ी सख्त मिहनत करनी पड़ती है। फावड़ा चलाना, ज़मीन खोदना, पानी देना, हल जोतना। ऐसे लोग तो स्वयं ही मिहनत करते रहते हैं परन्तु बहुत से ऐसे हैं जिनको दिन भर कुर्सी पर बैठे बैठे काम करना पड़ता है। यह दिन भर बैठना उनके स्वास्थ्य को बिगाड़ देता है। इसलिए ऐसे मनुष्यों को व्यायाम अर्थात् कसरत की आवश्यकता होती है।

जो लोग कसरत नहीं करते उनके शरीर में काहिली आ जाती है। कसरत करने से हाथ, पैर और शरीर के पुट्ठे बलिष्ठ रहते हैं। फुर्ती और चालाकी आती है। पाचन-शक्ति ठीक रहती और समय पर भूख लगती है। चित्त प्रसन्न रहता और काम करने को जी चाहता है। शरीर में सौन्दर्य बढ़ता है और देह सुडौल हो जाती है।

एक बेडौल आदमी भी अगर रोज़ कसरत किया करे
उसका शरीर सुन्दर निकल आता है। कसरत न क
वाले रूपवान् भी कुरूप हो जाते हैं; कहीं से कूब नि
आता है, कोई अङ्ग बढ़ जाता है, पैर तिरछे पड़ते हैं
इसलिए कसरत अवश्य करनी चाहिए।

कसरत कई प्रकार की होती है। सायं प्रातः भ्र
करना भी एक प्रकार की कसरत है। बीमार आदमि
को बहुत हलकी कसरत करनी चाहिए। या थे
सा भ्रमण ही पर्याप्त है। परन्तु जो अच्छे हैं उनको द
मुगदर और अन्य कसरतें भी करनी उचित हैं। देशी क
रतों में दण्ड सबसे प्रसिद्ध है। पुराने लोग इसको ब
किया करते थे। इसमें ये गुण हैं कि दण्ड करने से श
के सब अङ्गों पर ज़ोर पड़ता है। मुगदर से हाथ के
मज़बूत होते हैं। परन्तु मुगदर बहुत भारी न होने चाहि
हलका मुगदर जिसके नीचे का सिरा मोटा हो और
में झोंक बड़ी लगती हो अधिक उपयोगी है।

कुश्ती लड़ना, गदाका खेलना और बनेटी फि
भी अच्छे हैं पर इनका रोज़ करना कठिन है। वर्षा
में थोड़े दिन कुश्ती खेलना अच्छा है।

पानी में तैरना, किश्ती खेना और घोड़े पर स
होना भी बहुत अच्छी कसरतें हैं। जो लोग घोड़े पर
चढ़ते हैं उनकी टांगें मज़बूत और शरीर फुर्तीला
है। आज कल अँगरेज़ लोग घोड़े की सवारी को

पसन्द करते हैं। पुराने समय में क्षत्रिय लोग भी घोड़े पर सवार हो कर ही हवा खाते थे। बग्घी पर चढ़ कर हवा खाने से घोड़े पर हवा खाना अच्छा है। क्योंकि बग्घी पर निचला बैठना पड़ता है और व्यायाम का लाभ नहीं हो सकता।

अँगरेज़ी खेलों में सबसे अच्छे और मशहूर खेल ये हैं:—क्रिकिट, फ़ुटबाल, हाकी, पोलो और टेनिस। पोलो घोड़े पर खेली जाती है। फ़ुटबाल और हाकी में दौड़ना ख़ूब पड़ता है। दौड़ने से दिल मज़बूत हो जाता है। टेनिस में मिहनत तो बहुत नहीं पड़ती पर स्त्रियां भी शरीक हो सकती हैं क्योंकि यह बड़ा हलका खेल है।

शरीर के मुख्य मुख्य अङ्गों की पुष्टि के लिए डम्बल भी बड़े उपयोगी होते हैं पर इनको जितना हो सके धीरे धीरे करना चाहिए। जो लोग डम्बलों से जल्दी जल्दी कसरत करते हैं उनको कुछ लाभ नहीं होता। धीरे धीरे और थोड़ा थोड़ा करो लेकिन हर रोज़ करो तो अवश्य लाभ होगा।

कसरत करने की आदत बचपन से ही डालनी चाहिए, बहुत सी मातायें यह समझती हैं कि उनके बच्चे कसरत करने से बीमार हो जायँगे। यह उनकी बड़ी भूल है। निचला बैठने से बीमारी होती है न कि कसरत से। जो बच्चे छोटेपन से ही कसरत करते हैं। उनका शरीर बड़े

होने पर बड़ा सुडौल होता है। कसरत को वृद्धावस्था तक जारी रखना चाहिए।

भारतवर्ष में आज कल कसरत की तरफ़ स्त्रियों का तो बिलकुल ही ध्यान नहीं है। वे समझती हैं कि कसरत करना उनका काम नहीं। यदि कोई उनसे कसरत करने को कहे तो हँसी समझती हैं। एक तो मकान के भीतर बन्द रहना, दूसरे कसरत न करना इसी से उनकी तन्दुरुस्ती बिगड़ जाती है। भारतवर्ष की १०० में ९९ स्त्रियाँ रोगी रहती हैं। इसका कारण उनकी अविद्या है। जिस प्रकार मनुष्यों को कसरत की ज़रूरत है उसी प्रकार स्त्रियों को। देखो अँगरेज़ों की स्त्रियाँ घोड़े पर चढ़तीं, टेनिस खेलतीं और अन्य कसरतें करती हैं इसीसे उनका शरीर चुस्त रहता है। हिन्दुस्तान के बड़े घर की स्त्रियों से चला तक नहीं जाता। मेरी सम्मति में क्या स्त्री, क्या पुरुष, क्या बच्चा, क्या बुड्ढा सबको कसरत करनी चाहिए।

१३—क्रोध

मनुष्य की बुरी आदतों में एक आदत क्रोध भी है। हमको क्रोध उस वक्त आता है जब कोई हमें हानि पहुँचावे या हमारे कथन के विरुद्ध काम करे। जिस मनुष्य को क्रोध आता है उसका चेहरा तमतमा जाता है, आँखें लाल हो जाती हैं, साँस जल्दी जल्दी चलने लगता है, शरीर में कँपकपी आ जाती है। क्रोध का होना ही बतलाता

ाता है तो सहस्रों की जानें जाती हैं। बहुत से भाई दूसरे से लड़ कर सिर फोड़ बैठते हैं। इसलिए क्रोध सदा बचना चाहिए।

जिस समय तुमको क्रोध आवे उस समय उस वस्तु से पर क्रोध आया है अलग हो जाओ और थोड़ा सा ठंडा पी लो। अलग हो कर विचार करने लग जाओ अपने मन को उधर से हटा दो। अगर तुम्हारी आदत क्रोध की पड़ गई है तो रोज रात को इस पर थोड़ी देर ार करो और ईश्वर से प्रार्थना करो कि यह आदत तुम चली जाय।

क्रोध का एक कारण यह भी है कि लोग अपने आपको रों से बड़ा और अधिक बुद्धिमान् समझ लेते हैं। वैसे न अपनी बात को अच्छी और दूसरे की बात को बुरी मझते हैं। इसलिए अगर कोई इनसे इनके विरुद्ध बात ता है तो इनको क्रोध आजाता है। इसकी निवृत्ति सकती है कि हम दूसरे की बात पर विचार करना र उसका सहन करना सीखें। थोड़े दिनों में यह आदत ट जायगी।

जहाँ तक बने क्रोध को पहले से ही रोको और कभी कट न होने दो। क्योंकि अगर एक दफे प्रकट होगया फिर तुम्हारे रोके न रुकेगा। क्रोध करने से मनुष्य बल जाता रहता है और वह अपने शत्रु पर विजय हीं पासकता। क्रोध की सबसे अच्छी दवा विचार है।

है कि अमुक मनुष्य में बल नहीं है। जो लोग बलवान् होते हैं उन्हें क्रोध भी कम आता है।

क्रोध में मनुष्य बुद्धि से काम नहीं ले सकता। उसे अपना पराया कुछ नहीं सूझता। एक साथ जो चाहता है कर बैठता है। क्रोध वास्तव में एक नशा है। जैसे शराब पीकर मनुष्य अन्धा हो जाता है उसी तरह क्रोध से भी वह अन्धा हो जाता है। जब क्रोध उतर जाता है तब पछताता है कि हाय मैंने ऐसा क्यों किया।

एक समय एक मनुष्य के पास एक अच्छा कुत्ता था। एक दिन जब वह बाहर से आया तो देखा कि वह कुत्ता, मुँह लोहू से भरा हुआ उसके मिलने को चला आ रहा है। इसको देखते ही उसने समझा कि इस दुष्ट ने मेरा लड़का खा लिया। क्रोध के मारे उसका मुँह लाल हो गया और न आव देखा न ताव, झट तलवार से उसका सिर उड़ा दिया। इतने में बच्चा भी सोते से जग पड़ा और रोने लगा। जब इसने रोने का शब्द सुना तो इधर उधर देख

की इच्छा करने से पहले यह अभिमान हृदय से निकाल दो कि तुम बहुत जानते हो।

देखो, जो मनुष्य अभिमानी है वह दूसरों को अपनी दृष्टि में तुच्छ समझता है और उनसे घृणा करता है। उसके घृणा करने से वे भी उससे घृणा करने लगते हैं क्योंकि संसार का व्यवहार यही है कि तुम जैसा जिसके साथ करोगे वैसा पावोगे। यह तुम्हारी भूल है कि तुम अपने को बड़ा समझते हो। संसार में कोई यह नहीं कह सकता कि मुझसे बड़ा कोई नहीं। एक से एक बड़ा मौजूद है। हाँ, सबसे बड़ा ईश्वर ही है। सच है, ऊँट जब तक पहाड़ तले होकर नहीं निकलता उस वक्त तक जानता है कि मुझसे बड़ा कोई नहीं। इसी प्रकार जो मनुष्य दुनिया को विचार दृष्टि से नहीं देखते वे अपने को बहुत बड़ा समझते हैं।

अभिमानी मनुष्य दुनिया के दिखलाने के लिए अपनी शक्ति से अधिक काम सिर पर उठा लेता है। उसे वास्तव में अपनी शक्ति का अन्दाज़ा ही नहीं होता। वह समझता है कि मैं सब कुछ कर सकता हूँ परन्तु उससे होता कुछ नहीं। इसलिए अन्त में उसकी हँसी होती है। और वह लज्जित होकर निराश हो जाता है। यदि वह निराशा बार बार हुई तो उसका जीवन ही बिगड़ जाता है और उसकी सब शेख़ी किरकिरी हो जाती है।

अभिमानी लोगों को अपना अभिमान रखने के लिए झूठ और बनावट की भी आदत पड़जाती है। बहुत से ऐसे निर्धन मनुष्य दूसरों के दिखलाने के लिए ऋण ले लेकर अच्छे वस्त्र पहनने और बन ठन कर निकला करते हैं। थोड़े दिन तक उनका भेद किसी को मालूम नहीं होता परन्तु थोड़े दिनों में क़लई खुल जाती है और उसको लज्जित होना पड़ता है।

अभिमानी लोग दूसरों की अच्छी शिक्षा को ग्रहण नहीं करते। वे समझते हैं कि उनसे अधिक कोई नहीं समझ सकता। इसी लिए वे आपत्तियों में फँस जाते हैं। देखो, लङ्का का राजा रावण बड़ा अभिमानी था। जब वह श्रीमहारानी सीताजी को चुरा कर ले गया तब उसके भाई विभीषण ने उसे बहुत समझाया परन्तु वह मन्दमति तो अभिमान के नशे में चूर था। उसने किसी की न सुनी और अन्त में जो उसका परिणाम हुआ उसे संसार जानता है। देखो अकड़ कर मत चलो, नहीं तो गिर जाओगे।

कहावत है कि "अधजल गगरी छलकत जाय"। इसी प्रकार जो तुच्छ मनुष्य होते हैं वही बहुत अकड़ते और डींगें मारते हैं; परन्तु जो पुरुष भारी भरकम हैं वे अपनी मर्यादा को नहीं त्यागते। तुच्छ मनुष्य थोड़े से काम करने पर भी अपने को बहुत समझने लगते हैं। जब तुम किसी को अभिमान करते और डींगें मारते देखो तब समझ लो कि इसमें कुछ भी नहीं है; यह भीतर से ख़ाली है। क्योंकि ठोस चीज़ कभी बोला नहीं करती।

बुराइयाँ करते हैं। इसलिए जहाँ तक हो सके,
से कम ख़र्च करो।

ऊपर कहा जा चुका है कि सम्भव है एक
तुम्हें आमदनी न हो। ऐसी चार अवस्थायें हो
हैं। किसी अकस्मात् ख़र्च का आ पड़ना,
छूट जाना, बीमारी का आ जाना, और मर जाना

गृहस्थ में रह कर अकस्मात् ख़र्च बहुत
रहते हैं। कहीं किसी की शादी है, कहीं
कुछ है। कहीं कोई मेहमान आ गया, कह
सम्बन्धी को सहायता की आवश्यकता हुई।
तुम पहले से थोड़ा ख़र्च करते हो और तुम्हारे
पूँजी है तो तुमको कुछ कष्ट नहीं होने का।
तुम कोरे कुल्लांच हो तो सिवा लज्जित होने के
सकते हो। सब दिन एक से तो होते नहीं, सम्भ
अकाल ही पड़ जाय और तुम्हें अन्न में ही दूना
व्यय करना पड़े। अब अगर तुम्हारे पास रुप
भला, नहीं तो छटी तक की याद आ जाय
भूखों मरना पड़ेगा।

कभी कभी ऐसा भी होता है कि उद्यम छू
है। अगर तुम खेती करते हो और वर्षा न हुई तो
तक तुमको कुछ आमदनी न होगी और लगा
देना पड़ेगा। अगर तुम्हारे व्यापार होता है तो
है कि एक बार तुम्हें लाभ के बदले हानि हो
नौकरी करते हो तो कभी किसी अपराध पर

ख़र्च करना तो एक निश्चित बात है परन्तु आमदनी होना निश्चित नहीं। सम्भव है कि किसी समय में आमदनी न भी हो। इसलिए जब जब आमदनी हो उसमें से थोड़ा फिर के लिए अवश्य बचा लेना चाहिए। जो ऐसा नहीं करते वे सदा दुःख उठाते हैं।

बुद्धिमानों का कथन है कि मितव्यय स्वाधीनता की माता है। जो मनुष्य प्रति दिन कुछ न कुछ बचाता है वह कभी किसी के अधीन नहीं रहता, परन्तु जो ऐसा नहीं करता उसे क्षण क्षण पर उधार लेना पड़ता है। उधार लेकर मनुष्य दूसरे के अधीन हो जाता है। जिससे रुपया उधार लिया जाता है उसकी निगाहों में लेनेवाले की इज्ज़त नहीं रहती और कभी कभी तो कहीं उधार भी नहीं मिलता और बड़ा क्लेश उठाना पड़ता है।

जो लोग आमदनी से थोड़ा ख़र्च करते हैं, वही दूसरों की सहायता कर सकते हैं। अगर तुम्हारे पास कुछ और नहीं तो तुम दूसरों के साथ क्या ख़ाक करोगे? जितने दानी लोग हो गये हैं वे सब अपनी आय से थोड़ा ख़र्च करते थे। मन्दिर, कुएँ, धर्मशाला आदि ऐसे ही लोगों के बनाये हुए हैं। जिनका ख़र्च आमदनी से अधिक है वे तो नित दूसरों के सम्मुख हाथ फैलाते रहते हैं और उधार लेते लेते इनकी आदत पड़ जाती है। जब उधार नहीं मिलता तब दूसरी कुचेष्टायें सूझती हैं। चोरी करते हैं, रिश्वत लेते हैं, धोखा देते हैं और ऐसी ही बहुत सी

महीने के लिए छूट सकते हो। अब अगर तुम्हारे पास रुपया हो तो कुछ दिन भली भांति व्यतीत कर सकते हो परन्तु यदि हर महीने पहली तारीख पर निगाह रहती है कि जब लावें तब खावें तो ऐसी दशा में भूखों मरोगे। इसलिए हमेशा कुछ पल्ले डालते रहना चाहिए।

बीमारी और मृत्यु भी किसी के हाथ में नहीं। न जाने कब आजावें। बीमारी में तो उद्यम छूट ही जाता है और जैसा ऊपर कहा गया, बड़ा कष्ट होता है। आमदनी कुछ नहीं और ख़र्च बहुत। कहीं डाक्टर की फ़ीस, कहीं हकीम को नज़र कहीं दवा आती है, कहीं दारू। जिधर देखो ख़र्च ही ख़र्च। अब अगर रुपया नहीं तो खटिया में पड़े सड़ते रहो और बाल बच्चे भूखों मरते रहें। अगर कहीं मृत्यु हो गई तो और भी बेढब आ अटकी। छोटे छोटे बच्चे भूख के मारे बिलकते हैं; पैसा कफ़फ़न तक को पास नहीं हो तो हो कैसे। अगर ऋण रह गया तो सात पीढ़ी की आँसी बिंध गई।

इसीलिए बुद्धिमानों ने कहा है कि हमेशा आय से कम व्यय करो, कुछ न कुछ पल्ले डालते रहो। परन्तु यह हो तभी सकता है जब एक एक पैसे का ध्यान रक्खो। बहुत से लोग यह ख़याल करके कि यह चीज़ केवल एक पैसे की ही आती है ख़र्च कर देते हैं। वे यह नहीं समझते कि पैसा पैसा करके बहुत हो जाता है। एक तालाब में से यदि एक एक बूँद पानी बाहर जाय तो थोड़े दिनों में सब ख़ाली हो जायगा। इसी तरह एक एक पैसा करके तुम्हारी

और जिसने जवानी में धर्म नहीं किया वह बुढ़ापे में सिर पीटेगा।

हर काम के लिए एक वक्त और हर वक्त के लिए एक काम नियत होना चाहिए । कोई काम बे वक्त मत करो । बहुत से लोगों का कोई वक्त ही नहीं, जब चाहें खावें जब चाहें सोवें। ऐसे मनुष्य काहिल हो जाते हैं। अगर हर काम के लिए तुमने एक वक्त नियत कर लिया है तो तुमको खाली बैठने की आवश्यकता न होगी और न किसी काम को भूलोगे। जब वह समय आवेगा तुम्हें काम स्वयं ही स्मरण हो जाया करेगा। परन्तु यदि सब कार्य-वाही अनियत ही होवे तो कुछ ठीक न होगा। हर समय के लिए एक काम अवश्य होना चाहिए इससे आदमी का मन बुरी बातों की ओर नहीं जाता। अगर तुम्हारे पास कुछ काम करने को नहीं है तो बुरी बुरी बातें सूझेंगी।

वक्त रबर के समान है। अगर इसको सिकोड़ो तो छोटा हो जाय और अगर फैलाओ तो बड़ा। बहुत से लोग कहा करते हैं कि हमको समय नहीं मिलता। वास्तव में समय न मिलने का कारण यह है कि वह नियमानुसार काम नहीं करते। इधर बातें कीं, उधर गपशप हाँकी और वक्त गुज़र गया। वक्त को लोग चोर से दृष्टान्त दिया करते हैं यह चुपके से दबे पाँव निकल जाता है और जाता मालूम नहीं पड़ता। हाँ, अगर नियमपूर्वक काम किया जाय तो वही वक्त बहुत मालूम होने लगता है। देखो जिस दिन को तुम गप्पाष्टक में उड़ा देते हो उसी दिन में नियमानुसा

१६—समय

जिस प्रकार धन का व्यर्थ खर्च करना बुरा है उसी प्रकार समय का भी व्यर्थ खोना हानिकारक है। हमारा जीवन क्षण क्षण का योग है। यदि यह क्षण नष्ट हो जाय तो जीवन भी नष्ट हो जायगा। इसलिए हर एक पल को काम में लगाना चाहिए।

देखो समय धन से भी बहुमूल्य है। धन को तो हम फिर भी कमा सकते हैं परन्तु जो समय बीत गया वह फिर नहीं आसकता। अगर तुमने अपना लड़कपन खेल कूद में खो दिया और पढ़े नहीं तो क्या फिर लड़कपन तुमको मिल जायगा? किसी ने सच कहा है कि "गया वक्त फिर हाथ आता नहीं" जब मरने का समय निकट आता है तब चाहे सारा देश लुटा दो लेकिन एक मिनट भी जीवन का बढ़ नहीं सकता। दुनिया में कोई औषधि ऐसी नहीं जो एक पल और हमको जीवित रख सके। जब यह हाल है तब यह हमारी मूर्खता है कि हम अपना समय व्यर्थ खो देते हैं।

समय से बढ़कर दुनिया में कोई भी वस्तु नहीं। जिसने अपने जीवन का एक पल भी व्यर्थ नहीं खोया वह बड़ा भाग्यवान् है। हमारे जीवन की सफलता समय के अच्छी तरह व्यय करने पर निर्भर है। कितने मूर्ख हैं वे लोग, जो समय की कुछ परवा नहीं करते। जिसने लड़कपन में विद्या नहीं पढ़ी वह जवानी में क्या करेगा।

जनरल को सेना सहित नियत समय पर आने का हुक्म दिया था। इस जनरल कमबख़्त ने पाँच मिनट की देरी कर ली। इतनी देर में भाग्य उलटा हो गया और नेपोलियन क़ैद कर लिया गया। थोड़ी देर में वह जनरल आया परंतु तब क्या हो सकता था। कहावत मशहूर है कि—

"अब पछताये कहा होत जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत"।

घड़ी की लोग क़दर नहीं करते। भारतवर्ष में तो लोगों ने इसको केवल एक आभूषण समझ रक्खा है। वस्तुतः घड़ी बड़े काम की चीज़ है। इसका मूल्य तो थोड़ा है परन्तु यह सैकड़ों रुपये बचा देती है। इसकी आज्ञा पर चलने वाला बहुत से काम कर सकता है। यह हमको हमेशा बताती रहती है कि हमारा जीवन व्यतीत हो रहा है, काम को जल्दी करना चाहिए। वे लोग मूर्ख हैं जो और गहनों की तरह घड़ी को भी जेब में डाल लेते हैं पर उस से काम नहीं लेते। हमको चाहिए कि समय का बड़ा ख़याल रक्खें और जहाँ तक हो सके इसको व्यर्थ न जाने दें।

१७—जीवों पर दया

संसार में मनुष्य को छोड़ कर कोई और प्राणी ऐसा नहीं जो परमार्थ और परोपकार के विषय में सोच सकता हो। और जितने हैं वे सबके सब स्वार्थ को ही जानते हैं इसलिए मनुष्य को चाहिए कि न केवल अपनी

काम करने वाली रेलगाड़ी कई सौ मील चल लेती है। वही दिन तुम्हारे लिए छोटा और रेल के लिए बड़ा है।

लोग घंटे बचाना तो चाहते हैं पर मिनटों की परवा नहीं करते। अगर तुम एक एक मिनट को तुच्छ समझ कर खो दोगे तो तुम्हारा सब समय व्यर्थ ही नष्ट हो जायगा, तुम तो समझते हो कि आध घंटे में क्या हो जायगा चलो बातें ही कर लें। परन्तु तुम यह नहीं जानते कि इसी तरह आध आध घंटा करके समस्त जीवन व्यतीत हो जाता है। एक मिनट को तुम तुच्छ समझते हो परन्तु इसी एक मिनट पर तुम्हारी सफलता निर्भर है। देखो अगर एक मिनट पीछे तुम स्टेशन पर पहुँचो तो गाड़ी निकल जायगी और तुम्हें समस्त दिवस पड़ा रहना पड़ेगा। अगर तुम इम्तहान के कमरे में एक मिनट पीछे आओगे तो तुम्हें इम्तहान में कोई न लेगा और तुम्हारा एक वर्ष व्यर्थ जायगा। अगर तुम्हारा कोई मित्र मरने को निकट है और तुमने एक मिनट की देर कर ली तो तुम कभी उसको न देख सकोगे। अब कहो एक मिनट ने तुम्हें कितनी हानि पहुँचाई। अगर तुम इसका ख़याल रखते तो कितना लाभ होता।

नेपोलियन बोनापार्ट हमेशा वक़्त पर काम किया करता था। कभी एक मिनट को भी व्यर्थ न खोता था। इसी लिए वह इतना बड़ा आदमी हो गया। परन्तु एक बार उसके जनरल की पाँच मिनट की देरी ने उसका सारा काम

बिगाड़ दिया... लड़ रहा था उसने अपने

फिर यहाँ तक नहीं तांगा, गाड़ी आदि सवारियों में भी बैल ही काम आता है।

घोड़े के लाभ उन लोगों से पूछो जो इस पर चढ़ना जानते हैं। सो हो ! घोड़ा कैसा स्वामिभक्त होता है। अपने स्वामी को पीठ पर चढ़ाये इधर उधर ले जाता है। लड़ाइयों में घोड़ा ही सहायता करता है। यही तोपें खींचता है, यही बार बरदारी के काम में आता है। कहीं कहीं यह हल भी जोतता है। यही हाल बकरी, भेड़, भैंस आदि का है।

कुत्तों के लाभ तो अँगरेज़ों से पूछना चाहिए। अँगरेज़ लोग कुत्ते को इतना पसन्द करते हैं कि शायद विरला ही अँगरेज़ ऐसा होगा जिसके पास कुत्ता न हो। वास्तव में कुत्ता बड़े काम की चीज़ है। वह अपने स्वामी के लिए ऐसे ऐसे विचित्र काम करता है जिनको देख कर आश्चर्य होता है। रात को आप पड़े सोते रहिए कुत्ता आपकी रखवाली करेगा। चाहे स्वयं मर जाय पर आपकी एक चीज़ भी किसी को न छूने देगा।

यह तो रहा जानवरों का व्यवहार हमारे साथ। अब हमको भी देखना है कि हम इनके साथ क्या सुलूक करते हैं। पहले तो बहुत से हम में से इनको मार कर ही खा जाते हैं। गाय, बैल, भैंस, बकरी, भेड़, कबूतर, बटेर आदि सहस्रों रोज़ मारी जाती हैं और हम ऐसे निर्दयी हैं कि दम भर में चट कर जाते हैं। फिर रहे सहे जो मरने से बचते हैं उनके साथ बड़ा बुरा बर्ताव होता है। हम

साथ भलाई करे किन्तु अन्य प्राणधारियों को भी सुख पहुँचावे। यदि वह ऐसा नहीं करता तो स्वार्थवश होकर पशु कहलाने का अधिकारी हो जाता है।

इस लेख में हमको यह विचार करना है कि हमारा व्यवहार पशु-पक्षियों के साथ कैसा होना चाहिए। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो हमारी सी जान सबके है। सब हमारे समान खाना खाते, पानी पीते, सोते और डरते हैं। जिस तरह यदि हमको कोई मारे तो हमारे पीड़ा होती है इसी प्रकार यदि कोई इनको मारे तो इन्हें पीड़ा पहुँचती है। इन सब बातों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि हमको पशुओं के साथ दया का व्यवहार करना चाहिए।

थोड़ी देर के लिए विचार करो कि यह जानवर हमको क्या लाभ पहुँचाते हैं। बहुत से तो ऐसे हैं जिनके बिना हमारा जीवन ही नष्ट हो सकता है। जैसे गाय को ले लो। गाय का हम दूध पीते हैं और इसके बच्चों अर्थात् बैलों से खेती करते हैं। अगर आज हिन्दुस्तान में बैल न होते तो एक बीघा खेती भी नहीं हो सकती थी। फिर मनुष्य क्या खा कर जीते। यह गाय की ही बरकत है जिसमें हम बैठे मूँछों पर ताउ दे रहे हैं। कभी दूध पीते हैं, कभी दही खाते हैं, कभी मक्खन, कभी मलाई, कभी और और कभी खोया। बैलों ने खेत जोता, बैलों ने बोया, बैलों ने जलपान चलाया और भूसा तो स्वयं खाया, अन्न दिया। देखो कितने लाभ की चीज एक गाय है।

वेदों में लिखा है कि सब प्राणियों को अपना मित्र समझो, किसी को दुःख मत पहुँचाओ। जब ये पशु तुम्हारे साथ इतना प्रेम करते हैं तब तुमको भी इनके ऊपर दया करनी चाहिए, नहीं तो कृतघ्नता का पाप तुम पर चढ़ेगा। प्राचीन समय में भारतवर्ष के लोग पशुओं पर बड़ी दया किया करते थे तभी इनके यहाँ घी, दूध बहुत होता था। आज पशुओं को दुःख मिलने से घी, दूध का टोटा हो गया और घी, दूध के न मिलने से बल और पराक्रम लोगों में से चला गया। प्राचीन लोग गाय, कुत्ते, कौआ और चींटी आदि को भोजन दिया करते थे। देखो अहल्याबाई ऐसी दयाशील रानी थी कि चिड़ियों के लिए पके खेत बिना काटे छुड़वा देती थी।

हमको चाहिए कि पशुओं पर सदा दया करते रहें और उनको किसी प्रकार का कष्ट न होने दें। ये बेचारे न बोल सकते हैं और न अपना दुःख-दर्द दूसरों पर प्रकट कर सकते हैं। इनको ईश्वर ने हमारे अधीन बनाया है इसलिए हमको उचित है कि इनको सुख पहुँचावें नहीं तो ईश्वर हमसे अप्रसन्न होगा और हमको इसका दण्ड देगा।

१८—बच्चों को ज़ेवर पहनाना

भारतवर्ष में बच्चों को ज़ेवर पहनाने का रिवाज बहुत बढ़ गया है। माता-पिता अपने बच्चों को इसवास्ते बना

मकान के भीतर चैन से सोते हैं पर ये बेचारे रात भर सर्दी में बाहर ठिठुरते हैं। हम तो माल खाते हैं पर इनको वही रूखा सूखा, वह भी जब चाहा तब दे दिया, नहीं तो खबर भी न ली। जिन लोगों ने इक्के वालों को अपने टट्टू मारते देखा है वह कह सकते हैं कि इक्के वाला पशु है या टट्टू पशु। मीलों दुपहरी में भगाना, उस पर सोटों की मार, उस पर भी घास में कमी। अगर इक्के का हाँ वाला नौकर है तो वह रातब भी आधा ही खिलाता है

जानवरों को अकसर पानी तो मैला ही पिलाया जा है और शुद्ध वायु की इनके लिए कुछ परवाही नहीं जाती। इसलिए इन बेचारों को बहुत सी बीमारियाँ र जाती हैं। जब तक ये काम देते रहते हैं तब तक काम लिया जाता है तत्पश्चात् क़साई के हवाले कि जाता है जो शीघ्र ही उनकी बोटी बोटी अलग कर उ इस संसार के दुःखों से छुटकारा देता है।

सहस्रों जीव केवल शिकार के बहाने मारे जाते हैं आपका तो खेल होता है और इन बेचारों की जान जाती है। अच्छा खेल है कि आप ख़ुश होते हैं और दूसरा तड़ तड़प कर मर रहा है। यही नहीं और बहुत से खेल मनुष्य ने ऐसे निकाले हैं जिनसे बेचारे जानवरों को कष्ट मिलता है। कहीं कोई साँड़ लड़ाता है, कहीं तीतरबाज़ी होती है। लोग खड़े हँसते हैं और यह बेचारे बेज़बान दुःख पाते हैं। [illegible]

क सहस्रों निरपराध बच्चों की जान जाती है। ने मुक़द्दमे सुने जाते हैं जिनमें लोग ज़ेवर च में आकर बच्चों को मार डालते हैं। माता चारे जब यह हाल सुनते हैं तब सिर पीट कर पर यह नहीं जानते कि यह उनका ही क़सूर ार वे बच्चों को गहना न पहिनाते तो इस तरह जान न जाती। जिन बच्चों पर गहना नहीं होता होकर इधर उधर विचरते हैं और उनका कोई क बाँका नहीं कर सकता। इधर उधर फिरने से स्वास्थ्य भी ठीक रहता है।

ता-पिता को जानना चाहिए कि बच्चों का सबसे भूषण विद्या है। विद्या से भूषित बच्चों को और किसी की आवश्यकता नहीं। और जो बच्चा विद्याशून्य को चाहे कितना ही ज़ेवर से लाद दो वह मूर्ख ही जो लोग अपना धनाढ्यपना दिखलाने के लिए ा ज़ेवर पहिनाते हैं वे बड़े मूर्ख हैं। पहले तो अमीरी दिखलाने की कोई ज़रूरत नहीं। अगर पास बहुत सा धन है तो दूसरों को क्या? दूसरे हें ज़ाहिर ही करना है तो भूके नङ्गों को दान धनाढ्यपने का परिचय दो। सोना, चाँदी शरीर दने से केवल मूर्ख ही तुम्हारा मान करेंगे। इज़्ज़त की होनी चाहिए, न कि धन की। यदि इस पर भी अपने धन को प्रकट ही करना चाहते हैं तो हमारी

के लिए हाथों में कड़े, कानों में बाले और गले में कण्ठा आदि पहना देते हैं। इससे उनका यह भी आशय होता है कि जो कोई देखे वह यह जान ले कि हम बड़े अमीर हैं। जब कोई विवाह आदि होता है तब बहुत से लोग पड़ोसियों का गहना माँग कर अपने बच्चों को देते हैं। और जिस पर कम गहना होता है उसी की इज्ज़त होती है।

वास्तव में गहना पहनाना माता-पिता की बड़ी है। पहले तो गहना पहनने वाले बच्चे को अभिमान जाता है। वे अपने आपको दूसरों से बड़ा समझते अकड़ कर चलते हैं। इसलिए उनमें वह नम्रता नहीं र जो बच्चों का स्वभाव होना चाहिए। जब शुरू से ही ब की शेख़ी करने की आदत हो जाती है तब वे यथोचि

पुरुष, वह पशु के तुल्य होता है। विना विद्या के न तो हम यह जान सकते हैं कि हम क्या हैं, न ईश्वर को पहिचान सकते हैं और न अपना भला बुरा समझ सकते हैं। इस लिए पुरुष और स्त्री दोनों को विद्या की आवश्यकता है। विना पढ़े मनुष्य अन्धा होता है और पढ़कर उसकी चार आँखें हो जाती हैं।

बहुत से लोग कहते हैं कि स्त्री का काम रोटी पकाना, चौका करना और बच्चों को सँभालना है। इसलिए इनको विद्या की ज़रूरत नहीं। मगर यह उनकी बड़ी भूल है। रसोई आदि घर के काम भी उसी वक्त अच्छे होते हैं जब विद्या होती है। रसोई पकाना भी एक विद्या है। इसके ऊपर बहुत सी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। अगर स्त्रियाँ पढ़ी हों और इन पुस्तकों को पढ़ सकें तो अच्छी रसोई बना सकती हैं। रसोई बनाने के लिए भी इस बात का ज्ञान ज़रूरी है कि कौन सी वस्तु का गुण कैसा है। और, इसके लिए विद्या की ज़रूरत है।

यह कहना भी ठीक नहीं है कि स्त्रियों का काम केवल रसोई पकाना है। आज कल भी धनाढ्य घरों की स्त्रियाँ रसोई नहीं बनातीं। उनका दिन भर गपशप और व्यर्थ बातों में कटता है। यदि वे पढ़ी होतीं तो किताबें पढ़ने से अपना जी बहलातीं। जब ऐसी स्त्रियों के पास करने को कोई काम नहीं होता तो वे आपस में लड़ती हैं। यह बात मशहूर है कि स्त्रियाँ लड़ाका होती हैं। परन्तु इसका

बहुत से लोग कहते हैं कि पढ़कर स्त्रियाँ बिग[ड़]
जाती हैं। परन्तु उनकी यह भूल है। विद्या मनुष्य [को]
सुधारती है, बिगाड़ती नहीं। विद्या पढ़कर स्त्रियों को भ[ले]
बुरे और धर्म अधर्म का ज्ञान हो जाता है और वे धूर्तों [के]
फन्दे से बच सकती हैं।

इसलिए सब मनुष्यों को चाहिए कि वे लड़कों [की]
तरह लड़कियों को भी विद्या पढ़ावें। देखो, हमारी सरका[र]
ने हर जगह लड़कियों की पाठशालायें खोल दी हैं जहाँ स्त्रि[याँ]
ही पढ़ानेवाली होती हैं। अगर हम अपनी लड़कियों [को]
पढ़ावेंगे तो हमारा बड़ा कल्याण होगा।

२०—इंगलैन्ड

अन्य देशों से व्यापार करने से बड़े बड़े लाभ होते हैं [illegible]
देखो, सब चीजें सब जगह उत्पन्न नहीं होतीं। [illegible]
हमारे देश में होता है वह काबुल और ईरान में पैदा [illegible]
होता। इसी प्रकार काबुल का मेवा और ईरान का [illegible]
हमारे देश में नहीं हो सकता। [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

अमेरिका में जा जाकर उनकी अच्छी अच्छी बातों का अनुकरण किया है इससे उनकी बड़ी उन्नति हुई है।

प्राचीन समय में हमारे देश के लोग भी देशाटन किया करते थे। गुजरात के लोग व्यापार के लिए द्वीप द्वीपान्तर में जाते थे। सुमात्रा, जावा आदि पुरानी बस्तियाँ इन्होंने ही बसाई थीं। पर आज कल के लोग देशाटन करना पाप समझते हैं, इसीलिए दुःख उठाते हैं। देशाटन करने से मनुष्य में सहन-शक्ति भी आती है। इधर उधर कष्ट उठाकर मनुष्य बलयुक्त हो जाता है। देखो अँग्रेज़ लोग इसीलिए इतने बलवान होते हैं। परन्तु हमारे देश के लोग समझते हैं कि हमको अन्य देशों में कष्ट होगा इसलिए यह निर्बल होते जाते हैं। अगर हम अपना सुधार चाहते हैं तो देशाटन अवश्य करें।

२१—मेले

जब किसी एक कार्य्य के लिए किसी नियत तिथि को बहुत से आदमी किसी नियत स्थान पर एकत्र होते हैं तब इसको मेला कहते हैं। मेले हर देश में होते हैं परन्तु सब से अधिक मेले भारतवर्ष में देखने में आते हैं।

मेले कई प्रयोजनों से लगाये जाते हैं। पहला प्रयोजन मेला लगाने का यह है कि तिजारत को फ़ायदा

तुमने देखा होगा कि बहुत से गाँवों में आठवें दिन प[illegible] लगती है। इसका तात्पर्य केवल यही है कि आस पास के लोग अपनी अपनी बनाई हुई चीज़ें एक जगह लावें और आपस में तबादला कर सकें। तुम जानते हो कि मनुष्य अकेला अपने लिए सब चीज़ें उत्पन्न नहीं कर सकता। कोई कपड़ा बुनता है, कोई खेती करता है कोई जूता बनाता है। अब इन सबके एकत्र होने के लिए ज़रूरी है कि एक दिन नियत हो, जब सब लोग माल ख़रीद सकें इसी लिए मेले लगते हैं। तिजारत के मेले यद्यपि हमारे देश में भी बहुत होते हैं परन्तु सबसे अधिक इनका प्रचार इंगलैण्ड में है। यहाँ तो हर शहर में आठवें दिन मेला लगता है।

भारतवर्ष में मेलों का कारण यह भी है कि लोग धर्म-शिक्षा के लिए किसी नदी के किनारे इकट्ठे होते हैं। आजकल गङ्गाजी के किनारे साल में कई मेले लगते हैं। हरिद्वार का पर्व बड़ा प्रसिद्ध है। बड़े बड़े तीर्थों में भी मेला होता है। मथुरा में श्रावण के महीने में हिंडोले का मेला होता है। चैत्र में रथ-यात्रा होती है। जगन्नाथ में रथ-यात्रा मथुरा से भी भारी होती है। मालूम होता है कि पहले पहल मेले लगने का प्रयोजन यह था कि नदियों के किनारे बड़े बड़े ऋषि महात्मा रहा करते थे। इसलिए उनके उपदेश सुनने के लिए एक तिथि पर लोग वहाँ जाया करते थे। अब वे मुनि तो नहीं रहे किन्तु परिपाटी वही

ली जा रही है। तीर्थों में देवी-देवताओं की पूजा के लिए मेला होता है।

कहीं कहीं राष्ट्रीय बातों के लिए मेले हुआ करते हैं। स्तान में प्राचीन काल में इस प्रकार के मेले कई जगह हुआ करते थे। इनमें राज्य-सम्बन्धी बातों पर विचार होता था। कहीं कहीं खेल-कूद के लिए भी मेले होते हैं। वहां लोग इकट्ठे हो कर दङ्गल करते, कुश्ती लड़ते और अनेक पराक्रम दिखलाते हैं। आज कल भारतवर्ष में राम-लीला के पश्चात् इस प्रकार के मेले कई जगह होते हैं।

मेलों से कई लाभ होते हैं। एक तो इधर उधर के लोग आपस में मिलते जुलते रहते हैं और एक जगह की बनी हुई चीज़ें दूसरे देश को पहुँच जाती हैं, इससे कला-कौशल की उन्नति होती है। दूसरे दङ्गल वग़ैरः से शारीरिक अवस्था भी देश की अच्छी रहती है, इसके सिवा लोगों को देशाटन करने का अभ्यास बना रहता है।

२२—डाक

जबसे गवर्नमेंट ने डाकख़ाना जारी किया है तबसे लोगों को बहुत लाभ हुआ है। जब डाक न थी तब एक जगह से दूसरी जगह ख़बर भेजने में बड़ी कठिनता होती थी। एक ज़रा से काम के लिए आदमी भेजना पड़ता था और उसका बड़ा ख़र्च पड़ता था। बेचारे ग़रीब

लोग अपने दूर देश में रहते हुए भाइयों के साथ पत्र-व्यवहार न कर सकते थे। अगर कोई बीमार पड़ता तो घर वालों को उस वक्त खबर मिलती थी जब वह मर जाता था। इन मुश्किलों के कारण बहुत से लोग दूर देशों में न जा सकते थे। आदमी भेजने में भी बड़ी मुश्किल पड़ती थी। आदमी बीच में लुट जाते थे।

अब डाक के जारी होने से एक पैसे में हम अपने मित्रों का हाल जान सकते हैं। पहले तो यह भी डर था कि आदमी हमारे भेद को दूसरे पर प्रकट कर दे। परन्तु अब कुछ डर नहीं। कार्ड पर दो हरफ़ लिख कर डाक के बम्बे में छोड़ दो, कल सरकार तुम्हारे पत्र को बिना देखे तुम्हारे मित्र के पास पहुँचा देगी।

डाक से एक शिक्षा हमको यह भी मिलती है कि अलग अलग काम करने से इकट्ठे काम करना अच्छा है। देखो डाक क्या है? डाक केवल उस एकता का नाम है जो सब मनुष्यों ने गवर्नमेंट के द्वारा अपनी ख़बर पहुँचाने के लिए कर ली है। अगर मैं और तुम अपने पत्रों को अलग अलग कहीं भेजते तो हर बार एक एक आदमी भेजना पड़ता। अगर चाहे एक आदमी बहुत से पत्र भी एक साथ ले जा सकता है। अब गवर्नमेंट ने ऐसा प्रबन्ध किया है कि हर शहर और हर क़स्बे से हर दूसरे शहर और क़स्बे तक हर रोज़ पत्र ले जाने के लिए आदमी नौकर [illegible] हमेशा [illegible] से जाते हैं। उनका काम है कि

रहें। थोड़ी थोड़ी दूर के लिए एक आदमी नियत होता है और जिन शहरों के बीच में घोड़ा-गाड़ी या रेल चलती है वहाँ यह काम उनसे लिया जाता है। अब देखो इन आदमियों का वेतन (तनख़ाह) किसी एक मनुष्य को नहीं देना पड़ता किन्तु सब मिल कर देते हैं।

तुम कहोगे कि डाक के लिए हमसे तो कोई चन्दा नहीं लिया जाता। फिर उनके वेतन का रुपया कहाँ से आता है। देखो तुमको मालूम नहीं है। तुम डाकख़ाने में एक पैसा देकर कार्ड ख़रीदते हो। यही एक एक पैसा जमा होकर लाखों रुपये हो जाते हैं। इसी से डाकख़ाने वालों को नौकरी दी जाती है। पहले इँगलेंड में एक पत्र पर एक शिलिङ्ग देनी पड़ती थी जो यहाँ के बारह आने के बराबर है। और यह शिलिंग वह मनुष्य देता था जिसके पास पत्र आता था। इसलिए ग़रीब लोग बहुत कम पत्र भेजते थे क्योंकि बारह आना देना हर मनुष्य को बुरा मालूम होता है। इसमें कुछ लोग धोखा भी देते थे। इसके सम्बन्ध में हमको एक सच्ची कहानी याद आ गई है जिसको तुम पसन्द करोगे।

एक बार इँगलेंड का एक बड़ा आदमी एक गली में टहल रहा था। इतने में एक डाकिये ने एक ग़रीब-घर के दरवाज़े पर आवाज़ दी। एक लड़की मकान से निकली ... र को देख कर लौटाल दिया। इस बड़े आदमी ... आया और उसने अपने पास से एक शिलिंग दे ... पत्र दिला दिया। इस पर लड़की कहने लगी कि

जनाब आपने शिलिंग व्यर्थ व्यय की। यह पत्र मेरे भाई का है और भीतर से ख़ाली है। हम ग़रीब हैं इसलिए हम ने यह निश्चित कर लिया है कि यह पत्र भेजना रहे और मैं लौटा दूँ। जब तक यह पत्र आते रहेंगे मैं समझूँगी कि वह भला चङ्गा है।

इस बड़े आदमी ने यह देख कर कि ऐसा धोका देने की लोगों को ज़रूरत होती है। गवर्नमेंट से प्रार्थना की कि डाक का महसूल पैसा कर दिया जाय और यह मह... सूल कार्ड की सूरत में भेजने वाले से लिया जाय। पहले तो गवर्नमेंट को शङ्का हुई कि पैसे में बहुत नुक़सान रहेगा परन्तु जब यह नियम चला तो ज्ञात हुआ कि हानि के स्थान में लाभ हुआ क्योंकि सैकड़ों मनुष्य जल्दी जल्दी ...व डालने लगे।

अब तो डाक में बड़ी सुगमता हो गई है? पत्र ही ... किन्तु रुपये, कपड़े, किताबें और दूसरी चीज़ें, थोड़ा ...हसूल देने से, एक जगह से दूसरी जगह पहुँच ...ी हैं।

२२—खेती

... सब उद्यमों में अच्छा उद्यम है। हिन्दी में एक ... कि "उत्तम खेती मध्यम बंज, निखद चाकरी ...।" अन्य कामों के बिना आदमी की बन सकती ... बिना थोड़ी देर बनना दुर्लभ है।
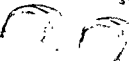
दुनिया में जितने उद्यम हैं वे सब एक खेती के ही सहारे चल रहे हैं। देखे अगर खेती न की जाय ते। अन्न कहाँ से आवे। अन्न न हो तो मनुष्य क्या खाय। खेती के बिना भूसा आदि भी नहीं हो सकता। इसलिए पशु भी खेती के ही सहारे जीते हैं। तिज़ारत आदमी उसी वक्त कर सकता है जब खेती के द्वारा अनेक चीज़ें उत्पन्न करे। जब नाज उत्पन्न ही नहीं किया तो बेचोगे क्या ख़ाक। तिज़ारत किसी नई चीज़ को नहीं बनाती, हाँ केवल एक बनी हुई चीज़ को एक जगह से दूसरी जगह डाल देती है। पर खेती नित नई चीज़ों को पैदा करती है।

खेती करने वाले मनुष्य अन्य व्यापारवालों की अपेक्षा बलवान् होते हैं। खेती का काम ही ऐसा है जिसमें रात दिन शारीरिक कार्य्य करने की ज़रूरत होती है। हल जोतना, पटेला चलाना, चर्सा खींचना, पानी देना; इन सबमें बल की आवश्यकता है। जब खेत पक जाता है तब उस की रक्षा के लिए बड़ा कष्ट सहन करना पड़ता है जिससे मनुष्य मज़बूत हो जाता है। खेती करने वाले के कभी व्यायाम अर्थात् कसरत करने की आवश्यकता ही नहीं होती। खेती करनेवाली जातियाँ अन्य जातियों से अधिक बलवान् होती हैं।

यद्यपि स्वार्थ ते हर एक ही उद्यम में होता है परन्तु कुछ परोपकार भी उसमें अवश्य होता है। अब सब उद्यमों से अधिक उपकार खेती में है। खेती करने वाला सारी मनुष्य-जाति की जान है। खेती न हो ते मनुष्य-

दी न हो। अन्न भोजन को और कपास कपड़े को खेती ही देती है। खेती के द्वारा सहस्रों मनुष्य नौकरियाँ पाजाते हैं और उनका पालन हो जाता है। इसीलिए प्राचीन काल में खेती करने वाले किसानों का बड़ा मान होता था। अब दुर्भाग्य से इस देश में किसानों का अपमान होता है इस लिए अच्छे मनुष्य खेती नहीं करते। आज कल भारतवर्ष में यह पेशा मूर्ख लोगों के हाथ में रह गया है इसलिए खेती की उन्नति नहीं होती। अन्य देशों में पढ़े लिखे विद्वान मनुष्य खेती करते और प्रतिष्ठा पाते हैं।

जो लोग खेती करते हैं वे पशुपालन भी भली भाँति कर सकते हैं। एक हल की खेती के साथ एक गाय और एक भैंस रख लेना कोई बड़ी बात नहीं है। मज़े से दूध पिये जाओ और दण्ड किये जाओ। अगर खेती नहीं तो एक बकरी का रखना भी दरवाज़े से हाथी बाँधने के समान है। चाहे कितनी बड़ी नौकरी पर आदमी हो वह एक दो पशुओं का पालन मुश्किल से कर सकेगा। पर खेती करने वाले को अनेक पशु रखने में भी दुःख नहीं होता।

खेती से वायु की शुद्धि होती है। वृक्षों का स्वभाव है कि वे कार्बोनिक एसिडगैस को चूसते और औक्सजिन को छोड़ देते हैं। इसलिए मनुष्य और पशुओं की साँस से निकली हुई कार्बोनिक एसिडगैस वृक्षों के खर्च में आजाती है और उसके स्थान पर औक्सीजन मिलकर वायु को पवित्र कर देती है। इससे मनुष्यों का स्वास्थ्य ठीक रहता है।

बहुत से लोग समझते हैं कि खेती करना मूर्ख लोगों का काम है। पर यह उनकी बड़ी भूल है। खेती करने में जितनी विद्या की ज़रूरत है उतनी दूसरे काम में नहीं। कृषिविद्या के सिखाने के लिए सर्कार ने कई स्कूल और कालिज खोले हैं जहां भूमि का देखना, बीज की जाँच करना और अनेक अनेक उत्तम बातें सिखाई जाती हैं। हम लोगों को चाहिए कि पढ़ने के पीछे खेती करने में अपना मन लगावें।

२४—व्यापार अर्थात् तिजारत

खेती से दूसरे दर्जे पर व्यापार अर्थात् तिज़ारत है। यद्यपि व्यापार केवल एक चीज़ के बदले दूसरी चीज़ के देने का ही नाम है किन्तु इसके बिना मनुष्य-जाति का काम नहीं चल सकता। पहले यह रीति थी कि जो मनुष्य जिस चीज़ को बनाता था उसके बदले दूसरी चीज़ अन्य मनुष्यों से खरीद लेता था। अब भी लोगों ने गाँवों में देखा होगा कि किसानों की स्त्रियां बहुत सी चीज़ें नाज के बदले मोल लेती हैं। परन्तु यह रीति सुगम न थी। एक छोटी सी चीज़ के बदले नाज या कपड़ा लिये लिये फिरना पड़ता था। पर अब रुपये की सहायता से यह काम चलता है अर्थात् हमारे समस्त व्यापार का माध्यम रुपया ही है।

तिजारत से एक देश का दूसरे देश से प्रेम भी बढ़ जाता है। आपस में जो वैर-भाव हो वह दूर हो जाता है। लोग एक दूसरे को भाई भाई समझने लगते हैं। कभी कभी आपस में विवाह आदि सम्बन्ध भी हो जाते हैं।

कला-कौशल को भी तिजारत से उन्नति होती है। जब कारीगर लोगों की बनाई हुई चीज़ें अन्य देशों में जाकर बिकती हैं और उनकी प्रतिष्ठा होती है तब उनकी हिम्मत बढ़ जाती है और वे नई नई तरकीबें निकालकर अच्छे से अच्छा माल तैयार करते हैं।

भारतवर्ष के लोगों को अँग्रेज़ों से शिक्षा लेनी चाहिए। जिन्होंने तिजारत के ही ज़रिये से दुनिया के बड़े हिस्से पर राज्य किया है। देखो पहले ये लोग यहाँ तिजारत के लिए आये थे। अब होते होते यहाँ के मालिक हो गये, यह तिजारत का ही प्रभाव है।

२५—पुस्तकें

सब जानते हैं कि सत्सङ्ग अच्छी चीज़ है पर यह दो तरह से प्राप्त होता है। एक अच्छे लोगों से मिलने से। दूसरे उनकी लिखी पुस्तकें पढ़ने से। हम दूर देश में रहते हुए अथवा मरे हुए भद्र पुरुषों से मिल नहीं सकते, उनसे मिलने का केवल एक ही उपाय है अर्थात् उनकी पुस्तकें पढ़ें।

विद्वान् मनुष्य के लिए किताबें सबसे बड़े मित्र हैं भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी, घर, बाहर, सब हालतों मे किताबें सहायता करती हैं। परन्तु किताबें अच्छी होनी चाहिएँ। बुरी बातें जिन किताबों में लिखी हैं उनके पढ़ने से तो न पढ़ना ही अच्छा है। ऐसी पुस्तकों को न पढ़ना चाहिए। जब तुम पुस्तकें पढ़ना चाहो तब अपने से बड़े आदमियों से सम्मति ले लो। वे तुमको ऐसी पुस्तकें बता देंगे, जिससे लाभ अधिक हो और समय थोड़ा लगे

२६—अख़बार

जो पुस्तकें नियत तिथियों पर इधर उधर की ख़बरें छाप कर बेची जाती हैं, उनको अख़बार कहते हैं। अख़बार रोज़ाना, साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक भी होते हैं। ये किसी एक मनुष्य के लिखे नहीं होते किन्तु मिल कर बहुत से लोग इनमें ख़बरें दिया करते हैं। कभी कभी उपयोगी विषयों पर निबन्ध भी दिये जाते हैं। परन्तु इनका प्रबन्धकर्ता एक ख़ास मनुष्य होता है। वही उनका विशेष कर उत्तरदाता होता है। मुख्य मुख्य लेख उसी के होते हैं। उसको हिन्दी में सम्पादक और अँगरेज़ी में एडीटर कहते हैं।

सम्पादकों का काम बड़ा भारी है। ये लोग कभी कभी गवर्नमेंट के कामों पर आक्षेप भी करते हैं। ऐसा करने में इनको बड़े चातुर्य से काम लेना पड़ता है

पुस्तकें विद्या का भण्डार हैं। पुस्तकों में अनेक लोगों की लिखी हुई बड़ी गूढ़ बातें भरी हैं जिनसे हम लाभ उठा सकते हैं। अगर पुस्तकें न होतीं तो अगले पुरुषों का हाल हम न जान सकते और फिर नई बातें सोचनी पड़तीं। आजकल जितना किताबों में विज्ञान लिखा गया है उससे आगे को हम सोचते हैं और इस तरह विज्ञान की नित उन्नति हो रही है।

किताबें पढ़नेवाला आदमी कभी अकेला नहीं रहता। जब उसके समीप कोई भी मनुष्य नहीं उस समय भी वह किताबें पढ़कर उनके बनानेवालों से भेंट कर रहा है। कैसा अच्छा लगता है जब हम एकान्त में पड़े हुए नये नये विचारों को किताबों में पढ़कर आनन्द उठाते हैं। कभी हँस जाते हैं, कभी मुसकरा उठते हैं। अनेक प्रकार के भावों की लहरें हमारे आत्मा में उठती हैं और हमारा चित्त प्रफुल्लित हो जाता है। जी बहलाने की सबसे अच्छी दवा दुनिया में किताब है। यदि किताब न होती तो बहुत से लोग मर जाते। कई विद्वान् लोग जब क़ैद कर दिये गये तब उन्होंने किताबें पढ़कर ही अपने जीवन को व्यतीत किया।

किताबें संसार में लोगों का नाम छोड़ जाती हैं। मकान और कुएँ आदि जल्द नष्ट हो जाते हैं परन्तु किताब बनाने वाले का नाम हमेशा रहता है। आज हम रामचन्द्रजी के विषय में क्या जानते हैं? उनके मकान नष्ट हो गये, उनके कर्तवों का पता तक नहीं। केवल रामायण ही उनके [illegible] तक यह [illegible]।

देशों का दूर दूर की लाभदायक ख़बरों से सूचित करते रहें।

भिन्न भिन्न अख़बारों के भिन्न भिन्न प्रयोजन होते हैं।
ी अख़बारों का यह काम है कि प्रजा का हाल राजा
ौर राजा का हाल प्रजा तक पहुँचाते रहें। यूरोप
ख़बारों की शक्ति बहुत बढ़ रही है। सम्पादक लोग
ात पर ज़ोर देते हैं देशवालों को वही करनी पड़ती
ों को किसी काम के करने को उभारना ग्रैर
करने से रोकना इनका ही काम है।

से अख़बार तिजारती होते हैं। इनमें चीज़ों का
मिलने का पता ग्रैर अन्य व्यापार-सम्बन्धी
ी हैं। इनको देख कर लोगों को अनेक बाज़ार-
मालूम हो जाता है जिससे तिजारत को
।

-सम्बन्धी अख़बारों में वर्तमान विद्वानों की
नई बातें लिखी होती हैं। इनके पढ़ने से
न काल का समस्त ज्ञान मालूम रहता
ार अवश्य पढ़ना चाहिए।

२७—शराब

शराब जिसको हिन्दी में मद्य कहते हैं, बड़ी बुरी चीज़ है। इसने सैकड़ों घर ख़राब कर दिये और सैकड़ों गाँव उजाड़ दिये। शराब जौ वग़ैरः को सड़ाकर बनाई जाती है। सड़ाने से इसमें एक प्रकार का कड़वापन आ जाता है। जिसके पीने से लोगों को नशा आ जाता है।

नशा वास्तव में एक प्रकार की बेहोशी है जिसमें शिर चकराने लगता है, बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। लोग भला बुरा नहीं जान सकते। आपस में गालियाँ बकने, मार पीट करते और अनेक कुचेष्टाओं के भागी होते हैं। शराब की दुकान पर एक रोज़ जाकर देखो। कोई तो सुस्त पड़ा हुआ है, कोई आँखें चढ़ा रहा है, कोई कीच में लोटता है और कोई गालियाँ बक रहा है।

शराब पीकर मनुष्य को अपना पराया नहीं सूझता, जो चाहे सो कर बैठता है। शराब पीने से मनुष्य का आचार, व्यवहार बिगड़ जाता है। बुद्धिमान् लोग शराब के पास तक नहीं फटकते।

शराब पीने से मनुष्य की पाचन शक्ति बिगड़ जाती है और शरीर में अनेक रोग लग जाते हैं। जिसने एक दफ़ा शराब पी ली उसे अधिक पीने की आदत हो जाती है। बहुत से ऐसे आदमी हैं जिनको आध घंटे भी बिना शराब के नहीं बनती। प्याले पर प्याला चढ़ाते जाते हैं। पर चाह वही बनी रहती है।

शराब एक प्रकार का विष है। जिस प्रकार विष खाने से प्यास बढ़ जाती, कै आती और शरीर टूटने लगता है उसी प्रकार शराब से दशा होती है। इसके पीने से शरीर थोड़ा थोड़ा क्षीण होने लगता है और मृत्यु शीघ्र ही आ जाती है।

शराब पीनेवाले अपनी आदत को रोक नहीं सकते। जब पीते पीते निर्धन हो जाते हैं तब अनेक दुराचार करके धन कमाते हैं। बहुत से लोग अपनी सारी आमदनी को शराब में खर्च कर देते हैं और अपने घरवालों को भूखों तड़पाते हैं। इसलिए शराब को दुराचारों की जड़ समझना चाहिए।

बहुत से लोगों का मत है कि प्राचीनकाल में भारतवर्ष में शराब बहुत पी जाती थी। वे कहते हैं कि पहले लोग सोम की शराब पीते थे। परन्तु उनका यह कहना हम को ठीक मालूम नहीं पड़ता। वास्तव में सोम एक लता होती थी जिसका रस निकाल कर ऋषि-मुनि यज्ञ में पिया करते थे। सोम रस को शराब कहना ठीक नहीं है। जिस प्रकार गन्ने के रस को कोई शराब नहीं कहता इसी प्रकार सोमरस को भी शराब नहीं कहना चाहिए। सोमरस वस्तुतः एक औषधि है जो ब्राह्मी आदि बूटियों की तरह बुद्धि के बढ़ाने में बड़ी लाभदायक है।

शराब पीने से सब लोगों को बचना चाहिए। आजकल इसी काम के लिए हर शहर में मद्यनिवारिणी सभायें जारी की गई हैं, जिनका काम यह है कि लोगों को शराब पी

बुराई दिखाकर उनको इससे बचावें। हम सबका कर्तव्य है कि ऐसी सभाओं में सम्मिलित हों। आजकल मदर्सों में भी ऐसी पुस्तकें पढ़ाई जाने लगी हैं जिनमें शराब की बुराई हो। प्रत्येक मनुष्य का यह मुख्य कर्तव्य होना चाहिए कि वह बालकों को ऐसी शिक्षा देते रहें कि जिससे वे सदैव शराब से दूर रहें।

२८—तमाकू

जिस प्रकार शराब एक विष है इसी प्रकार तमाकू भी विष ही है। भेद केवल इतना है कि शराब का विष शीघ्र प्रकट हो जाता है और तमाकू का देर में। इसीलिए लोग तमाकू को विष नहीं कहते। वास्तव में यह बात थोड़ी सी देर में स्पष्ट हो जाती है। देखो जो मनुष्य अफीम खाया

सूँघने के काम में लाते हैं। मेरी राय में जहां तक हो सके इसको त्यागना ही अच्छा है।

बहुत से लोग कहते हैं कि तमाकू औषधि है। परन्तु उनको जानना चाहिए कि औषधि का नित्य प्रति सेवन करना अच्छा नहीं है। कुनैन को हमेशा कोई नहीं खाता। इसी प्रकार अगर तमाकू औषधि है तो उसे केवल रोग दूर करने के लिए पीना चाहिए। आजकल लोग रोग की निवृत्ति के लिए इसको नहीं पीते।

तमाकू भी शराब की तरह बुद्धि के लिए हानिकारक है। इससे मनुष्य की मनन शक्ति जाती रहती है। बच्चों पर तो इसका बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। जिस तरह गुलाब का फूल जेष्ठ के घाम से कुम्हला जाता है इसी तरह बच्चों का गुलाब सा हृदय तमाकू पीने से सूख जाता है। तुमने देखा होगा कि निगाली में धुआं निकलते निकलते काई सी जम जाती है। यह क्या है? वास्तव में यह धुएँ की कीट है। बस ठीक इसी तरह मनुष्य का हृदय तमाकू का सा काला हो जाता है।

इसी नुक़सान को देख कर श्रीमान डाइरेक्टर साहिब ने हुक्म दे दिया है कि जो लड़का तमाकू या सिग्रिट पीता हुआ कहीं पकड़ा जावे उसे दण्ड देना चाहिए। विद्यार्थियों को चाहिए कि तमाकू को कभी न छुएं और तमाकू पीनेवाले लड़कों से भी अलग बैठा करें जिससे यह बुरी लत उनको न लग जावे।

२६—प्रतिज्ञापालन

प्रतिज्ञा-पालन मनुष्य में एक बहुत बड़ा गुण है। जो मनुष्य सदैव अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हैं उन्हीं का कल्याण होता है। विश्वास की जड़ प्रतिज्ञापालन ही है। यदि हम अपने कहे हुए पर कायम नहीं रहते तो लोगों से हमारा विश्वास उठ जाता है और सब हमको मिथ्यावादी समझ लेते हैं। विश्वास उठने पर हमको अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। जो कुछ हम कहते हैं उसको सब झूठ मानते हैं।

देखो विश्वास से मनुष्य के कितने काम चलते हैं। हज़ारों रुपया हम एक दूसरे से विना काग़ज़ लिखे उधार ले लेते हैं और प्रतिज्ञा के अनुसार चुका देते हैं। यदि एक बार हमारी प्रतिज्ञा झूठी हो जाय तो फिर कोई हमारा विश्वास नहीं करता। किसी कवि ने ठीक कहा है कि—

झूठे को कोइ जगत में करै प्रतीति न भूल।

पहले तो किसी बात की प्रतिज्ञा न करो। यदि एक बार प्रतिज्ञा कर लो तो उसका निर्वाह अवश्य चाहिए। बड़े आदमी कभी अपनी बात को जाने नहीं देते। रामायण में लिखा है कि—

रघुकुल रीति सदा चलि आई।
प्राण जायँ पर वचन न जाई॥

देखो! श्रीमहाराज रामचन्द्रजी ने इतने कष्ट उठाने पर भी अपनी प्रतिज्ञा का उल्लङ्घन नहीं किया। श्रीमहाराज हरिश्चन्द्रजी की कथा भी जगत् में विख्यात ही है। वह सत्य प्रतिज्ञा के हाथ बिक गये। उनकी रानी उनसे पृथक् हो गई। उनका इकलौता पुत्र रोहिताश्व मृत्यु की भेंट हुआ परन्तु राजा अपने वचनों पर दृढ़ रहे। इसका फल यह हुआ कि उन्हें अन्त में नित्य आनन्द प्राप्त हुआ।

देखो! संसार में मनुष्य के सम्बन्ध प्रतिज्ञा पर ही निर्भर हैं। यदि प्रतिज्ञा टूट जाय तो ये सब सम्बन्ध भी नष्ट-भ्रष्ट हो जायँ। जिस समय बालक का जनेऊ होता है वह प्रतिज्ञा करता है कि मैं ईश्वर को साक्षी देकर यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं कभी झूठ न बोलूँगा और चोरी आदि कुकर्म न करूँगा, ब्रह्मचारी रह कर सदैव विद्या का उपार्जन करूँगा। यदि वह ब्रह्मचारी जनेऊ को केवल एक साधारण धाग समझ ले और अपनी प्रतिज्ञाओं को भङ्ग कर दे तो न व विद्या प्राप्त सकता है, न किसी अन्य प्रकार की उन्नति क सकता है।

विवाह भी एक तरह की प्रतिज्ञा ही है। स्त्री-पुरुष सज्जन लोगों के सम्मुख इस बात की प्रतिज्ञा करते हैं कि हम लोग नित्य प्रति प्रेमपूर्वक रहा करेंगे और धर्मानुसार अपना जीवन व्यतीत करेंगे। विवाहित स्त्री-पुरुषों को चाहिए कि वे सर्वदा इस प्रतिज्ञा को पालन करते रहें, जिसमें उनका कल्याण हो।

मनुष्य के हृदय में अच्छे विचार बहुत कम उठते हैं। यदि एक बार भी ऐसे विचार उठें तो हमको चाहिए कि उनको जकड़ कर पकड़ें। विचारों के पकड़ने की रीति यह है कि उनको मन में ख़ूब सोचें और फिर इनके पूरा करने की प्रतिज्ञा करें। प्रतिज्ञा करने पर ईश्वर से प्रार्थना करें कि हे जगदीश्वर! आप हमको ऐसी शक्ति दीजिए कि हम इस उत्तम कार्य्य के करने में समर्थ हों, जिसके करने की हमने प्रतिज्ञा की है।

३०—देशभक्ति

यदि कोई हमारे साथ भलाई करता है तो हमारे हृदय में उसके लिए एक प्रकार का प्रेम उत्पन्न हो जाता है। देखो जब तुम अपने कुत्ते को टुकड़ा डालते हो तब वह स्नेह-वश अपनी पूँछ हिलाता है और तुमसे इतना प्यार करता है कि यदि तुम पर विपत्ति आपड़े तो अपनी जान जोखों में डाल कर तुम्हारी जान बचाता है।

ऊपर के दृष्टान्त से यह नतीजा निकला कि जो तुम्हारे साथ भलाई करे उसके साथ तुमको प्रेम करना चाहिए। ख देखो देश ने तुम्हारे साथ बड़ा उपकार किया है। सी जगह तुम उत्पन्न हुए, इसी जगह बढ़े। यहीं का तुमने न खाया, पानी पीया और यहीं की वायु को तुम सूँघ रहे । जिस देश ने तुम्हारे साथ इतनी भलाई की हो उसके थ भक्ति करना अत्यावश्यक है।

तुमको बतलाया गया है कि माता की सेवा करना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है अब देखो माताएँ तीन होती हैं। एक तो ईश्वर जो सर्व संसार की जननी है; दूसरे वह स्त्री जिसकी कोख में हमने जन्म लिया है; तीसरे वह देश भी हमारी माता है जहाँ हमने जन्म लिया है। इसीलिए इसको मातृभूमि कहकर पुकारते हैं। जब देश भी हमारी माता है तब हमको देशभक्त होना ही चाहिए।

परन्तु प्रश्न यह है कि मनुष्य किस प्रकार देशभक्त हो सकता है। बहुत से मूर्ख राज्य-विरोध को ही देशभक्ति कहते हैं पर यह उनकी भूल है। राज्य से देश की रक्षा होती है इसलिए राजभक्त मनुष्य ही देशभक्त हो सकता है। यदि किसी देश में सुराज्य न हो तो वहाँ पापी मनुष्य बढ़ जाते हैं और अच्छे मनुष्यों को बहुत कष्ट होता है इससे देश को बहुत हानि होती है।

देशभक्ति में वे सब बातें शामिल हैं जिनसे देश की वृद्धि हो। इसके लिए सबसे पहली बात यह है कि हमारा आचार ठीक हो; कोई भ्रष्ट काम हम न करें। जिस प्रकार एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है इसी प्रकार एक दुराचारी समस्त देश को कलङ्कित कर देता है। जिसने अपने चालचलन को ही नहीं सुधारा वह दूसरों के साथ क्या भलाई करेगा और देश की क्या भक्ति करेगा। जलता हुआ दीपक ही दूसरे दीपकों को जला सकता है, बुझा हुआ नहीं। इसी प्रकार सदाचारी मनुष्य ही दूसरों के आचार को ठीक कर सकता है, दुराचारी नहीं। बहुत

से ऐसे मनुष्य हैं जो देश देश का नाम करते हैं। दूसरों के सामने वह स्वदेश बतलाते हैं परन्तु जब समय आते हैं और बड़ी लम्बी चौड़ी बातें बनाकर अपने को देशभक्त प्रकाशित करते हैं। परन्तु जानना चाहिए कि केवल कथन मात्र से ही मनुष्य देशभक्त नहीं होता। ऐसे लोगों को, जो अपने मतलब से आते हैं और जिनका चालचलन ठीक नहीं है, कदापि कहना चाहिए।

सदाचार के अतिरिक्त दूसरी बात जो देशभक्ति के लिए जरूरी है विद्या है। स्वयं विद्या पढ़ना और दूसरों में विद्या का प्रचार करना ही उचित देशभक्ति है। बहुत से ऐसे मनुष्य हैं जो दिखाते दिखलाते तो कम हैं परन्तु वास्तव में देश में विद्या की उन्नति के लिए तन मन धन से कोशिश करते हैं। ऐसे लोग सराहनीय हैं क्योंकि ये लोग प्रशंसा की परवा न करते हुए चुपचाप देशोन्नति करने में तत्पर होते हैं।

तीसरी बात देशभक्ति के लिए यह है कि देश के दीन मनुष्यों की दीनता दूर करने के लिए कला-कौशल आदि जारी करना, जिससे ये लोग ऐसे कार्य में संलग्न रह कर रोटी कमा सकें और साथ ही साथ दूसरे मनुष्यों के साथ उपकार करके देशभक्त बना सकें।

सच्ची देशभक्ति यही है कि हम देश की सेवा करें और सब देश-निवासियों को अपना भाई समझें। [illegible]

घृणा करने लगते हैं पर ऐसे लोग देशभक्त नहीं हो सकते। जिन मनुष्यों ने हमारे देश में जन्म लिया है वह हमारे भाई हैं। यदि वे दरिद्र हैं और हम धनवान हैं तो हमको चाहिए कि उनका निरादर न करें और उनको भी अपने समान धनवान बनाने की कोशिश करें। यदि हमारे देशी भाई मूर्ख हैं और हम विद्वान हैं तो यह दोष उन बिचारों का नहीं है जिनके पास न तो विद्या-प्राप्ति का साधन है और न वे विद्या के फल को जानते हैं। हमको चाहिए कि उनको भी विद्वान् बनावें।

३१—राजभक्ति

जिस प्रकार हर एक कार्यालय में एक अधिष्ठाता होता है उसी प्रकार एक देश में भी एक मुख्य अधिष्ठाता होता है जिसका यह काम है कि देशभर का प्रबन्ध करे। इस अधिष्ठाता का नाम राजा है। राजा देश में सबसे बड़ा गिना जाता है क्योंकि राजा से देश के बहुत से काम निकलते हैं। राजा के ऊपर ही देश की उन्नति का होना निर्भर है। राजा ही पापी जनों को दण्ड देकर अच्छे आदमियों को उनके पंजे से बचाता है। वही विद्या का प्रचार करता है। वही दीनों की दुर्दशा को दूर करता है। वही लोगों की चोर डाकुओं से रक्षा करता है।

हिन्दुस्तान के लोग इस समय उन विपत्तियों को नहीं जानते जो बिना राजा के एक देश में उत्पन्न हो जाती हैं।

थोड़ी देर के लिए विचार करो कि अगर राजा न हो
कैसी मुश्किलें पड़ें। पहले पहल बलवान् लोग निर्बलों
पर हस्तक्षेप करें और उनके माल असबाब को लूट कर
अपना घर भरें। विचारे निर्बल निर्दोष मारे जावें, उनकी
दाद फ़रियाद कोई न सुनें। चोर, उचक्के और लुटेरे लोगों
को धोखे से लूट लें। ऐसी दुर्दशा में न तो रेल
गाड़ी। सड़कें कौन बनावे, नहर कौन खुदावे। अ
पड़े तो लोग मर जावें। मारे भय के न तो किसान खे
करें न जुलाहा कपड़ा बुने। न बनिये व्यापार करें। ऐसा
मुश्किल हो कि सबका नाक में दम हो जाय।

अब बताओ भला कौन ऐसा मूर्ख होगा कि जो बिना
राजा के देश में रहना चाहता हो। जिस प्रकार जीवन
का आधार वायु, अन्न और जल पर है इसी प्रकार उन्नति
का आधार राज-प्रबन्ध है। राज-प्रबन्ध से संसार के
अनेक प्रकार के सुख मिलते हैं।

थोड़ी देर के लिए दृष्टान्त के तौर पर हम को अपनी ब्रिटिश
गवर्नमेंट पर विचार करना चाहिए और सोचना चाहिए
कि इससे हमको क्या क्या सुख मिलते हैं। देखो विद्या के
लिए हमारे सम्राट् ने देशभर में स्कूल और पाठशालायें
स्थापित कर रक्खी हैं जहाँ युवक जन विद्या पढ़ के उन्नति
कर सकें। फिर खेती और व्यापार आदि के लिए भी हर
जगह सुगमता है। किसान निर्भय होकर खेती करता है।
बनिया निश्चिन्त इधर का माल उधर और उधर का इधर
कर रहा है। सड़कें नित्य प्रति बनती रहती हैं। [illegible]

चिट्ठी आदि के लिए काम कर रहा है और एक पैसे में सैकड़ों कोस की ख़बर आजाती है। अब ज़रा सोचो कि ये सब बातें क्यों हैं। इसका केवल यही कारण है कि हमारा सम्राट् हमारे ऊपर है। हमको कोई सताने वाला नहीं है। यदि कोई हमारी चीज़ चुरावे या हमको मारे तो हम झट पुलिस के द्वारा उसको दण्ड दिला सकते हैं। हमारे अच्छे बादशाह ने पुलिस को इसीलिए नियत किया है कि बलवान् निर्बलों को न सतावें। हम रात को आनन्द की नींद सोते हैं और राज की ओर से चौकीदार पहरा देते हैं।

जो राजा हमारे लिए इतनी भलाई करता है उसके साथ हमको भी प्रेम करना चाहिए। इसी प्रेम का नाम राजभक्ति है। हिन्दुस्तान के लोग हमेशा से राजभक्त प्रसिद्ध हैं। हिन्दुस्तान में राजा की भक्ति करना और उसके

भागी होते हैं। दृष्टान्त के लिए चोर को ले लो। राजा को अप्रसन्न करके, क़ैद तो भोगना ही है पर से अतिरिक्त उसका आत्मा भी मलिन हो जाता है।

हमको चाहिए कि हम अपने सम्राट का हृद सम्मान करें, उनकी आज्ञा पालने तथा उनको अपनी श के अनुसार राजप्रबन्ध में सहायता दें। जो लोग रा विरोधी हैं और कपट छल करना चाहते हैं उनका निरा किया करें, इसी में हमारा कल्याण है।

३२—कला-कौशल

ईश्वर ने मनुष्य को कार्य्य करने के लिए हाथ दिये हैं। परन्तु हाथों को अन्य वस्तुओं की सहायता की आवश्यकता होती है। अगर हम केवल हाथ ही से लिखना चाहें तो कैसे लिख सकते हैं? इसी लिए आदमी ने लिखने की एक कल बनाई जिसको क़लम कहते हैं। इस कल को बढ़ाते बढ़ाते इतना बढ़ाया कि छापेख़ाने और टाइपराइटर बन गये। छापेख़ाने क्या हैं यह केवल लिखने की कल हैं।

यद्यपि आरम्भ में मनुष्य हाथ ही से कार्य्य करता है परन्तु केवल हाथ से किये हुए काम कलों की अपेक्षा भद्दे होते हैं और उनमें देर अधिक लगती है। जितनी जल्दी कल से होती है उतनी हाथ से होनी असम्भव है। तुमने पैर-गाड़ी देखी होगी जिसको अँगरेज़ी में बाइसिकिल कहते हैं। यह एक प्रकार की कल है जिसके द्वारा हम अपने पैर और

एक बार घुमाने से बहुत दूर तक जा सकते हैं। केवल पैर ही नहीं किन्तु मनुष्य ने अन्य अङ्गों के लिए भी कलें बना ली हैं। देखो दूरबीन से हमारी आँख सैंकड़ों कोस की वस्तु को देख लेती है। खुर्दबीन अर्थात् सूक्ष्मदर्शक यन्त्र से हम उन छोटी से छोटी वस्तुओं को भी देख सकते हैं जो विना इस यन्त्र के आँख से दिखाई न पड़ती थीं। इन के सिवा ग्रामोफ़ोन और फ़ोनोग्राफ़ आदि सहस्रों यन्त्र हैं जिनसे हमारे अङ्गों को बड़ी सहायता मिलती है।

इँगलिस्तान और अमेरिका आदि देशों में तो कलों का इतना प्रचार है कि लोग साधारण काम भी कलों के द्वारा ही करते हैं; आटा पीसना, कुट्टी काटना आदि सब बड़ी सफ़ाई से होता है। पहले समय में तो हिन्दुस्तान में भी लोग बड़ी बड़ी कलें बनाते थे। कहा जाता है कि इन लोगों के पास एक ऐसी बारीक कल थी कि जिससे एक बाल को चीर डालते थे। श्रीमहाराजा भोज के समय में एक मनुष्य ने एक ऐसा अच्छा पंखा निकाला था कि जो विना चलाये पुष्कल वायु देता था। परन्तु आज कल हिन्दुस्तान में नई कलें बनाने वाले मनुष्य बहुत ही कम रह गये हैं। अभी थोड़े दिन हुए कि एक हिन्दुस्तानी ने धूप से रोटी पकाने की कल बनाई थी परन्तु उसका रिवाज अभी देश में नहीं हो सका।

जिस देश में कलें अधिक हों तो समझना चाहिए कि वहाँ के लोग बहुत बुद्धिमान् हैं। क्योंकि बुद्धिमान् लोग थोड़े समय में अधिक काम करना चाहते हैं। दूसरे यह

हादी है खांड़ साफ़ करने की एक बड़ी उत्तम कल बनाई है जिससे एक तो खांड़ साफ़ बनती है दूसरे माल अधिक बैठता है। परन्तु हमारे देश के ज़मींदार उससे लाभ नहीं उठाते। यह ठीक है कि शुरू में खर्च अधिक पड़ेगा परन्तु अन्त में लाभ भी तो बहुत होगा। कहावत है कि थैली डालो तो थैला भरेगा अर्थात् जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा। देखो रेल की कम्पनी करोड़ रुपया लगा देती है फिर देखो लोगों को कितना आराम होता है और उनको भी करोड़ क्या अरबों बच रहते हैं। इसलिए लोगों को चाहिए कि कला-कौशल्य की ओर ध्यान दें, नई नई कलें बनायें। जितनी बन चुकी हैं उनसे लाभ उठाना सीखें तभी हमारा सुधार हो सकता है।

३३—परोपकार

दूसरों के साथ भलाई करने का नाम परोपकार है। परोपकार दो शब्दों से बना है 'पर' का अर्थ है दूसरे और 'उपकार' का अर्थ है भलाई। यदि हम संसार-चक्र की ओर दृष्टि डालें तो प्रतीत होता है कि संसार में ईश्वर ने सहस्रों वस्तु ऐसी बनाई हैं जो नित्य प्रति परोपकार में ही लगी रहती हैं। देखो सूर्य तड़के ही निकल कर हम को गर्मी और रोशनी देता है। चन्द्र अपने समय पर हम को प्रकाश पहुँचाता है। परन्तु ये हमसे कुछ बदला नहीं चाहते। वायु हमारे साथ कितनी भलाई करता है।

हमारी नाक से बहुत ही उत्तम मिलेगी। कोयल की आवाज़ कितनी प्यारी होती है। परन्तु इन प्राणियों में और हम में केवल इतना भेद है कि यह दूसरों के साथ भलाई नहीं कर सकते और हम कर सकते हैं। यदि हम दूसरों के साथ उपकार न करें तो हम और पशु समान ही हैं। अपना पेट तो सभी पालते हैं और अपने बच्चों को भी सभी पालते हैं। परन्तु यदि दूसरों के साथ ऐसा किया जाय तो हम वस्तुतः मनुष्य कहलाये जा सकते हैं।

परोपकार कई प्रकार से किया जा सकता है। सब से अच्छा परोपकार यह है कि हम दूसरों को विद्या दें। मनुजी महाराज का उपदेश है कि विद्या का दान सब दानों से बढ़ कर है। कहावत है कि—"एक देवा मरे और सिख देवा जिये"। इसका आशय यह है कि जो मनुष्य किसी को एक रोटी खिला देता है वह उसके साथ इतना उपकार नहीं करता जितना वह करता है जो उसे शिक्षा देता है। क्योंकि रोटी से क्षण भर की भूख दूर होती है परन्तु शिक्षा से मनुष्य आयुपर्यन्त के कष्टों से बच सकता है।

कि उसको किस वस्तु की आवश्यकता है। धनवान् के
धन देना ऐसा ही है जैसे सूर्य्य को दीपक दिखाना। दूसरे
विचारणीय बात यह है कि तुम्हारी भलाई से उस मनुष्य
को कुछ हानि तो न पहुँचेगी, जैसे यदि कोई मनुष्य भूखा
है परन्तु काम कर सकता है। यदि तुम उससे यह कह दो
कि हम सदा तुमको खाना दिया करेंगे तो ऐसा करने से
वह मनुष्य आलसी और पुरुषार्थहीन हो जायगा। इस-
लिए ऐसे मनुष्य को कोई ऐसा काम देना चाहिए जिससे कि
उसकी रोज़ी चल सके। यही सच्चा परोपकार है।

देखो, हमारी ब्रिटिश गवर्नमेंट जब अकाल के मारे
लोगों को सहायता देती है तब उनसे उनकी शक्ति के अनु-
सार कुछ न कुछ काम ज़रूर लेती है जिससे उन लोगों
का निर्वाह भी होता रहे और उनको मुफ़्त खाने और
मुफ़्त रोटियाँ तोड़ने की आदत न रहे। वास्तव में यही सच्चा

के पुत्र यह समझ लेते हैं कि माँ-बाप से ऐसा ही वर्ताव करना चाहिए और वैसा ही करते हैं। इसलिए हर मनुष्य का कर्तव्य है कि अपने बड़ों का सत्कार करे।

जो लड़का अपने गुरु का कहना नहीं मानता और उनका आदर नहीं करता। उससे गुरुजी सदा अप्रसन्न रहते हैं। ऐसे लड़के के हृदय में गुरुजी की ओर से श्रद्धा भी नहीं होने पाती और इसलिए उसे विद्या नहीं आती। जो लड़के नेक और चतुर होते हैं वे सदैव गुरुजी की सेवा करते और उनकी आज्ञा का पालन करते हैं।

बड़ों के सत्कार से मनुष्य की प्रशंसा भी होती है। जो देखता है यही कहता है कि देखो कैसा अच्छा और शीलवान् लड़का है। जब सब लोग हमारी प्रशंसा करते तब हमको बड़ा आनन्द होता है और अच्छे काम करने र हमारा जी चाहता है। यदि हम अपने बड़ों का त्कार नहीं करते तो सब लोग हमको बुरा कहते हैं। ज्छे पुरुषों को हमसे घृणा हो जाती है और समय पड़े ई हमारी सहायता नहीं करता।

जो बड़े और गुणवान् लोग हैं वे हमको अनेक प्रकार लाभ पहुँचाते रहते हैं। जो विद्वान् हैं उनकी विद्या किसी न किसी अंश में हम पर प्रभाव पड़ता रहता इसलिए हमारा कर्तव्य है कि इस ऋण को चुकाने के हम इनका आदर करें। ऐसे पुरुषों का आदर करने लोग हमको और अधिक लाभ पहुँचायेंगे।

ɛ